हनुमान
ज्योतिष

हनुमानज्योतिष

विषयानुक्रमणिका

अथ चक्रवर्णनारम्भः

इति चक्रवर्णनं समाप्तम्

अथ फलकथनवर्णनारम्भः

अथान्यस्फुटविषयाः

इत्यन्यस्फुटविषयाः ।

❀ श्री ❀

हनुमज्ज्यौतिषम्

जयति रघुवंशतिलकः
कौशल्या हृदयनन्दनो रामः ।
दशवदननिधनकारी
दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ।।

श्रीरामचन्द्र उवाच

ऋष्यमूके गिरौ रामो हनुमन्तं हि पृच्छति ।
सूर्यात्किं पठितं शिष्य ! तत्सर्वं कथयस्व मे ।। १ ।।

श्रीरामचन्द्रजीने ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमानजीसे पूछा कि हे शिष्य ! सूर्यनारायण भगवान् से तुमने क्या पढ़ा ? वह सब मुझसे कहो ।। १ ।।

श्रीहनुमानुवाच

सर्वशास्त्रं मया ज्ञातं वेदान्तादि यथाविधि ।
ज्योतिःशास्त्रं सर्वफलं किं वदामि तव प्रभो ।। २ ।।

हनुमानजीने कहा—हे प्रभो ! मैंने वेदान्तादि समस्त शास्त्रों को अच्छी रीति से समझा । उन शास्त्रों में ज्योतिष शास्त्र सब फलों को देने वाला है, आपसे क्या निवेदन करूँ ? ।। २ ।।

श्रीरामचन्द्र उवाच

अन्यच्छास्त्रं विवादाय पदार्थानां विबोधकम् ।
भविष्यदर्थबोधाय ज्योतिःशास्त्रं वदाधुना ॥ ३ ॥

श्रीरामचन्द्रजीने कहा--हे हनुमान ! दूसरे जितने शास्त्र हैं, वे सब विवाद (झगड़ा) के लिए और शब्दों के अर्थ को बतानेवाले हैं। परन्तु ज्योतिष शास्त्र संसार की सब भविष्य बातों का ज्ञाता है। अतः उसी को इस समय कहो ॥ ३ ॥

श्रीहनुमानुवाच

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा जगाद हनुमान्वचः ।
भविष्यदर्थबोधाय श्रृणु तद्रघुनन्दन ॥ ४ ॥

श्रीरामचन्द्रजी का ऐसा वचन सुनकर हनुमान्जी ने कहा--हे श्री रघुनाथ ! भविष्यत् (आगे होनेवाली) बातों का ज्ञान जिससे होता है, उसे सुनिए ॥ ४ ॥

दशकोष्ठं समालिख्य चक्रं नामयुतं पुनः ।
आद्यवर्णस्वरो ग्राह्यो भविष्यति सुनिश्चितम् ॥ ५ ॥

चक्र के आकार का दस कोठा बनावे। फिर उसमें नाम लिखे। फिर उस कोठे के बीच में जो शब्द लिखा है, उसके पहिले अक्षर से भविष्यत् फल निश्चय करना चाहिए ॥ ५ ॥

अथ चक्रक्रमः

गमनागमनञ्चैव कृषिर्व्यापार एव च।
गङ्गाप्राप्तिश्च रोगो हि मृत्युश्चिन्ता तथैव च ॥ ६ ॥
सेवासाहित्यवासाश्च मन्त्रचिन्ता धनस्य च।
मनस्कामस्तथा रोगो धनोत्पत्तिकरस्तथा ॥ ७ ॥
वादो विवादः सङ्गश्च युद्धं मिलनमेव च।
याञ्चा प्राप्तिश्च विश्वासः स्थानं नष्टनिधिस्तथा ॥ ८ ॥
ग्राहको भीतिगर्भौ च चिन्ता बन्धनमेव च।
विश्वासविद्याद्यूताश्च सम्बन्धो राज्यमेव च ॥ ९ ॥
संतानसञ्चयोद्वाहा विक्रयः प्रणयस्तथा।
कुशलं च क्रमेणैषां चक्राण्युक्तानि नामभिः ॥१०॥
चक्रकोष्ठेऽङ्गुलिः स्थाप्या कुर्यादत्र परीक्षणम् ॥११॥

चक्र समुदाय लिखते हैं—विदेश जाना, परदेश से लौटना, खेती, रोजगार, गंगा की प्राप्ति, रोगों से मृत्यु की चिन्ता, सेवा (नौकरी), सहायता, वास, मन्त्र की चिन्ता, धन की चिन्ता, मनोरथ, रोग, धन का उपार्जन, वाद-विवाद (शास्त्रार्थ), साथ, युद्ध, मुलाकात, माँगना, प्राप्ति, विश्वास, स्थान, नष्ट हुआ धन, ग्राहक, भय, गर्भ की चिन्ता, बन्धन (जेल), विद्या, द्यूत, प्रेम, कुशल इत्यादि। इन सबों में जिसकी परीक्षा करनी हो, प्रत्येक पत्र के ऊपर जो नाम लिखा है उस नाम के अनुसार चक्र-कोष्ठ में अँगुली रखकर कोष्ठ के अङ्क के अनुसार फल समझना ॥ ६-११ ॥

अथ गमनपरीक्षा

बालिनं नलनीलौ च सुग्रीवं रामचन्द्रकम् ।
विभीषणं लक्ष्मणं च जाम्बवन्तं तथाङ्गदम् ।
हनुमन्तं समालिख्य यात्रागमनमादिशेत् ।। १ ।।

चक्र १

इस चक्र में जो दस नाम लिखे हैं, जिसको कहीं जाने की इच्छा होवे, वह इस चक्र के नामों में से किसी पर अँगुली रखकर परीक्षा करके शुभ और अशुभ फल समझ लें ।। १ ।।

अथ आगमनपरीक्षा

आगमं चिन्तयेदत्र विलम्बं शीघ्रतस्तथा ।
हनुमान् नीलनलकौ विभीषणसुकण्ठकौ ।।
लक्ष्मणो रामचन्द्रश्च ह्यङ्गदो जाम्बवांस्तथा ।
बाली चैतेषु वक्ष्यामि क्रमेण गणयेद् बुधः ।। २ ।।

चक्र २

परदेश से अपने देश आने की परीक्षा जिसे करनी हो अर्थात देर में आना होगा या जल्दी, वह इस चक्र से विचार करे ।। २ ।।

अथ कृषिकर्मपरीक्षा

कृषिकर्मपरीक्षादि यत्नतश्चिन्तयेद् बुधः ।
अंगदो हनुमांश्चैव बाली च नलनीलकौ ॥
सुग्रीवो रावणभ्राता श्रीरामो लक्ष्मणस्तथा ।
जाम्बवांश्च क्रमादेतैः फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥ ३ ॥

चक्र ३
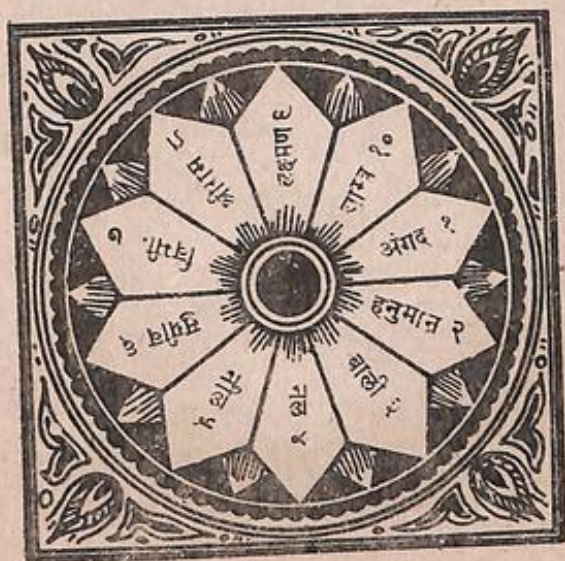
जिन लोगों की इच्छा खेती करने की हो, वे इष्ट या अनिष्ट सब फल क्रम से इस चक्र द्वारा जान लें ॥ ३ ॥

अथ व्यापारपरीक्षा

जाम्बवानङ्गदश्चैव　　हनुमान्वालिसंज्ञकः ।
नलो नीलश्च सुग्रीवो　विभीषणनृपात्मजौ ।
लाभालाभं शुभं दृष्ट्वा　यत्नतः परिकीर्तयेत् ॥ ४ ॥

चक्र ४

जिनकी इच्छा व्यापार (रोजगार) करने की है वे इस चक्र के भीतर जो नाम लिखे हैं, उनमें से किसी पर अँगुली रखकर शुभ और अशुभ फल को समझ लें ॥ ४ ॥

अथ गङ्गाप्राप्तिपरीक्षा

गङ्गातीरमृतिं प्राप्तुं यदीच्छति च मानवः ।
नलो बाली सुकण्ठश्च नीलो लङ्केश्वरस्तथा ॥
श्रीरामो जाम्बवान् वीरो लक्ष्मणो हनुमांस्तथा ।
अंगदश्च विजानीयात् क्रमेणैतैः फलं शुभम् ॥ ५ ॥

चक्र ५

जो लोग गङ्गातट पर मृत्यु की इच्छा से यात्रा करते हैं, वे इस चक्र के अनुसार शुभ तथा अशुभ फल को समझें ॥ ५ ॥

अथ मृत्युचिंतापरीक्षा

मृत्युचिन्तापरीक्षां यः सततं चिन्तयेद्बुधः ।
गरुडः शङ्करश्चैव गणेशः कातिकस्तथा ।।
श्रीकृष्णश्चापि प्रद्युम्नो बलभद्रश्च साम्बकः ।
अनिरुद्धः कामदेव एभ्यः स्यान्मृत्युनिश्चयः ।। ६ ।।

चक्र ६

जो रोगी मनुष्य अधिक दुखी होकर क्लेश से मुक्ति पाने की अथवा मरने की परीक्षा करना चाहे, तो इस चक्र के नामों के अनुसार फल जानना चाहिये ।। ६ ।।

अथ देवेष्टपरीक्षा

देवोऽयं परितुष्टः स्याद्यदि पृच्छति मानवः।
कामश्च गरुडश्चैव कार्तिकेयो गणेश्वरः॥
महादेवश्च श्रीकृष्णोऽनिरुद्धस्तत्पिता तथा।
साम्बश्च बलभद्रश्च फलमेभिरुदाहरेत्॥७॥

चक्र ७
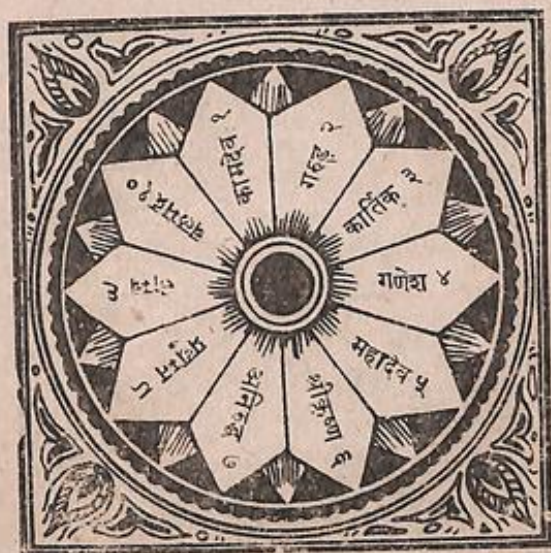
जो मनुष्य देवता की सेवा कर प्रसन्न होने की परीक्षा करना चाहे, तो इस चक्र के नामों के अनुसार शुभाशुभ फल का ज्ञान कर ले॥७॥

अथ सहायतापरीक्षा

साम्बः कामश्च गरुडो महादेवश्च कार्तिकः ।
गणेशश्चैव श्रीकृष्णो बलः प्रद्युम्न एव च ॥
अनिरुद्धः क्रमादेतैः फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥८॥

चक्र ८

जो मनुष्य किसी की सहायता पाने की इच्छा से प्रश्न करना चाहे तो इस चक्र के नामों के अनुसार इष्ट तथा अनिष्ट की परीक्षा करे ॥ ८

अथ वासनिरूपणपरीक्षा

अनिरुद्धश्च साम्बश्च कामो गरुड़ एव च।
गणेश्वरो महादेवः कार्तिकः कृष्ण एव च॥
बलभद्रश्च प्रद्युम्नो जानीयात् स्थितिकर्मणि॥ १॥

चक्र १

जो मनुष्य किसी जगह रहने की अभिलाषा करे, वह इस चक्र के नाम के अनुसार शुभ तथा अशुभ फल जानकर तदनुकूल कार्य करे॥ १॥

अथ मन्त्रपरीक्षा

युधिष्ठिरश्चाहिवरः कार्तिकेयसुयोधनौ ।
दुःशासनश्च गांगेयो ह्यर्जुनः सहदेवकः ॥
नकुलो भीमसेनश्च क्रमान्मन्त्रविचारणम् ॥१०॥

चक्र १०

किसी कार्य में मन्त्र (सलाह) देने से क्या परिणाम होगा यह जानना चाहे, तो इस चक्र के नामों के अनुसार विचार कर परीक्षा करे ॥ १० ॥

अथ धनचिन्तापरीक्षा

प्रद्युम्नो ह्यनिरुद्धश्च महादेवो रतीश्वरः ।
गरुडो बलभद्रश्च गणेशः कार्तिकस्तथा ॥
श्रीकृष्णसाम्बो कथितौ जानीयाच्च शुभाशुभम् ॥११॥

चक्र ११

जो मनुष्य धन की चिन्ता अर्थात् धन मिलेगा या नहीं, यह जानना चाहे तो इस चक्र के नामों के अनुसार शुभ और अशुभ की परीक्षा कर सकता है ॥ ११ ॥

अथ मनःकामपरीक्षा

आदौ बलश्च प्रद्युम्नोऽनिरुद्धः साम्ब एव च।
कामदेवोऽथ गरुडो महादेवगणेश्वरौ ॥
कार्तिकेयश्च श्रीकृष्णौ जानीयाच्च शुभाशुभम् ॥१२॥

चक्र १२

जो मनुष्य कामना पूर्ण होने की परीक्षा करना चाहे, तो इस चक्र के अनुसार शुभाशुभ की परीक्षा करे॥ १२॥

अथ रोगपरीक्षा

कार्तिकेयश्च श्रीकृष्णो बलः प्रद्युम्न एव च ।
अनिरुद्धश्च साम्बश्च कामदेवः खगेश्वरः ॥
महादेवो गणेशश्च क्रमपूर्वं शुभं वदेत् ॥१३॥

चक्र १३

जो मनुष्य रोग अच्छा होगा या नहीं यह जानना चाहे, तो इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अनुसार रोग छूटेगा या न छूटेगा समझ ले ॥ १३ ॥

अथ धनागमपरीक्षा

गणेशः कार्तिकेयश्च श्रीकृष्णो बलभद्रकः ।
प्रद्युम्नो ह्यनिरुद्धश्च साम्बो वै मीनकेतनः ॥
गरुडश्च महादेवः क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥१४॥

चक्र १४

जो मनुष्य किसी व्यापार से धन लाभ की परीक्षा करना चाहे वह इस चक्र के बीच में अँगुली रखकर नामों के अनुसार शुभाशुभ फल का ज्ञान कर ले ॥ १४ ॥

अथ वादपरीक्षा

लक्ष्मणो जाम्बवानेव ह्यङ्गदो हनुमांस्तथा ।
बाली नीलो नलश्चैव सुकण्ठकविभीषणौ ।।
रामचन्द्रः क्रमादेभिर्जानीयाद्वै शुभं फलम् ।।१५।।

चक्र १५
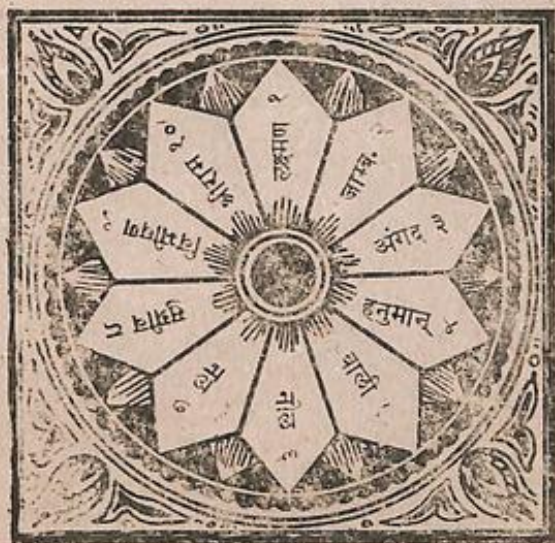
जो मनुष्य वाद (किसी से अपमान) से सन्देह-युक्त हो तो वह इस चक्र के मध्य में अँगुली रखकर नामों के अनुसार शुभकाम फल जान ले ।। १५ ।।

अथ विवादपरीक्षा

अहीश्वरश्च राधेशो धर्मराजोऽर्जुनस्तथा ।
भीमश्च नकुलश्चैव तथा दुःशासनः स्मृतः ॥
गांगेयः सहदेवश्च तथा दुर्योधनो मतः ।
शुभाशुभफलं तेषां क्रमपूर्वं विचारयेत् ॥१६॥

चक्र १६

जो मनुष्य किसी प्रकार के विवाद (झगड़ा, बहसमें) फँस गया हो तो इस चक्रमें अँगुली रखकर नामों के अनुसार शुभ और अशुभ फल जान ले ॥ १६ ॥

अथ सङ्गपरीक्षा

भीष्मोः दुःशासनश्चैव अर्जुनोऽहिवरस्तथा ।
नकुलः सहदेवश्च भीमो दुर्योधनस्तथा ॥
कर्णो युधिष्ठिरश्चैव क्रमपूर्वं विचारयेत् ॥ १७ ॥

चक्र १७

जो मनुष्य किसी से साथ या साझा अथवा हिस्सेदारी करना चाहे, तो इस चक्र के नामानुसार शुभाशुभ फल समझ ले ॥ १७ ॥

अथ युद्धपरीक्षा

कर्णो गंगाकुमारश्च सर्पराजो युधिष्ठिरः ।
अर्जुनो भीमसेनश्च नकुलो दुष्टशासनः ॥
दुर्योधनः सहदेवश्च एभिः फलमुदाहरेत् ॥ १८ ॥

चक्र १८

जो मनुष्य किसी से युद्ध (लड़ाई) करने की इच्छा करे, तो इस चक्र में अँगुली रखकर जय-पराजय (जीत-हार) समझ ले ॥ १८ ॥

अथ मिलनपरीक्षा

दुःशासनोऽर्जुनश्चैव गांगेयो नकुलस्तथा।
सहदेवो धर्मराजो दुर्योधनवृकोदरौ॥
अहीश्वरस्तथा कर्णः क्रमादेतैर्विचारयेत्॥ १९॥

चक्र १९

जो मनुष्य किसी से मिलने की इच्छा करे, तो इस चक्र के नाम के अनुसार शुभाशुभ (भेंट होगी या नहीं) फल जान ले॥ १९॥

अथ यात्रापरीक्षा

सहदेवो धार्तराष्ट्रो दुःशासनमरिञ्जन् ।
कर्णश्चाहिवरो धर्मः सव्यसाजी वृकोदरः ॥
नकुलश्च क्रमादेतैर्जानीयाद्वै शुभाशुभम् ॥ २० ॥

चक्र २०
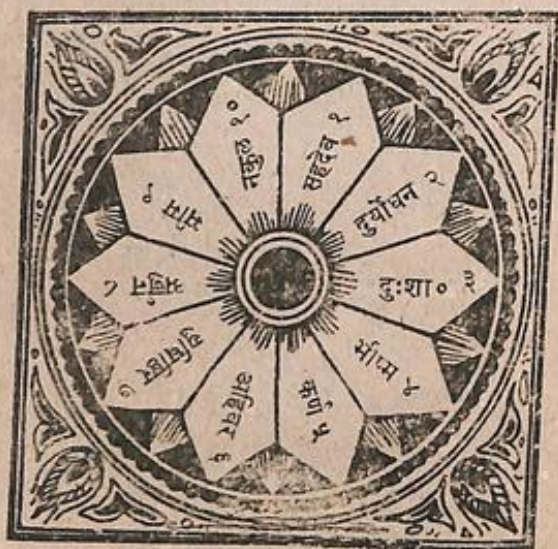
जो मनुष्य किसी से कुछ माँगने की इच्छा करे, तो इस चक्र के नामों के अङ्कानुसार सफलता और विफलता का ज्ञान कर ले ॥ २० ॥

अथ स्वस्थानपरीक्षा

अगस्त्यो नारदश्चैव वसिष्ठो मिथिलस्तथा ।
अंगिराः सनको दुष्टवाचः सानन्दकश्च वै ॥
जनको गोरखश्चैव जानीयात्तैः शुभाशुभम् ॥ २१ ॥

चक्र २१.

जो मनुष्य अपने स्थान से (मकान या दूसरी जगह) जाने की इच्छा करे, वह इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अङ्कानुसार लाभ-हानि जान ले ॥ २१ ॥

अथ नष्टद्रव्यपरीक्षा

भीमश्च माद्रीतनयौ दुःशासनयुधिष्ठिरौ ।
दुर्योधनश्च राधेशोऽहिवरश्च सरिज्जनुः ॥
सव्यसाची च दशमः क्रमात्सर्वं फलं वदेत् ॥ २२ ॥

चक्र २२
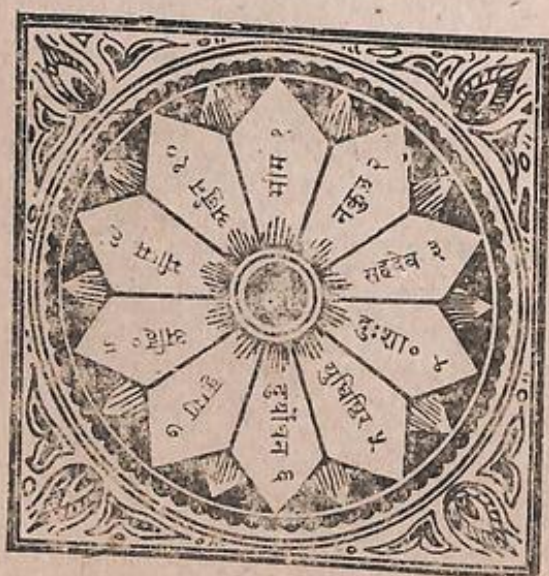
जिसका द्रव्य (धन-धान्य या कोई चीज) नष्ट हो गया हो अर्थात् कोई चुरा ले गया हो अथवा खो गया हो या उसके पाने की इच्छा करे, तो इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अङ्कानुसार उनके लाभ-अलाभ का ज्ञान कर ले ॥ २२ ॥

अथ प्राप्तिपरीक्षा

नकुलः सहदेवश्च दुर्योधनवृकोदरौ ।
गंगापुत्रः कर्णदेवोऽहिर्धर्मोऽर्जुन एव च ॥
दुःशासनश्च दशभिरेतैः सर्वमुदाहरेत् ॥ २३ ॥

चक्र २३
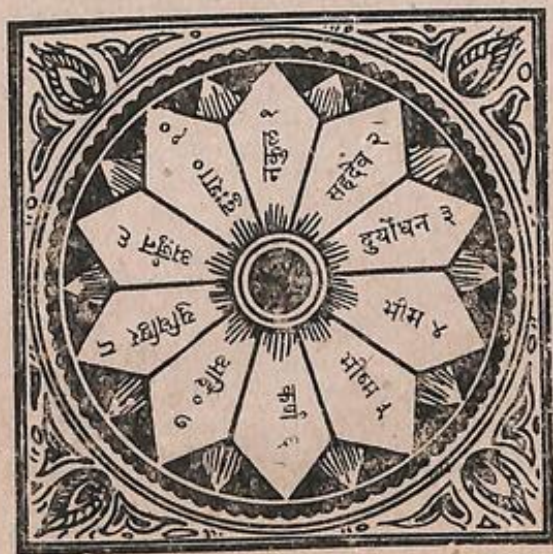
जो मनुष्य कहीं से कुछ पाने की इच्छा करे, वह इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अङ्कों के अनुसार उसको पाने या न पाने का ज्ञान कर ले ॥ २३ ॥

अथ गूढशत्रोः परीक्षा

अर्जुनो भीमसेनश्च यमौ दुर्योधनस्तथा ।
दुःशासनश्च गांगेयो राधेयश्च युधिष्ठिरः ॥
अहीश्वरः क्रमादेतैः फलं चक्रे विचारयेत् ॥ २४ ॥

चक्र २४

जिस मनुष्य के चित्त में यह संदेह हो कि कोई मनुष्य चुपके से मेरा पीछा कर रहा है, वह इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अङ्कानुसार शुभाशुभ फल समझ ले ॥ २४ ॥

अथ ग्राहकपरीक्षा

गोरखश्चाप्यगस्त्यश्च ह्यङ्गिरा नारदस्तथा ।
सनकश्चाथ सानन्दो जनको दुष्टशासकः ॥
वसिष्ठो मिथिलादत्तः क्रमात्सर्वं वदेत् फलम् ॥ २५ ॥

चक्र २५

जो मनुष्य यह जानना चाहे कि ग्राहक मिलेगा या नहीं, तो इस क्र के नाम के अङ्कानुसार शुभाशुभ की परीक्षा करे ॥ २५ ॥

अथ भीतपरीक्षा

वसिष्ठो मिथिलश्चैव गोरखोऽगस्त्यकस्तथा ।
दुर्वासा नारदश्चैव ह्यङ्गिराः सनकस्तथा ॥
सानन्दो जनकश्चैव क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ २६ ॥

चक्र २६

जो मनुष्य किसी से भय (डर) कर शुभ फल की इच्छा करे, इस चक्र के नामों के अङ्कानुसार इष्ट-अनिष्ट फल जान ले ॥ २६ ॥

अथ गर्भपरीक्षा

नीलसुग्रीवलङ्केशास्तत: श्रीरामलक्ष्मणौ ।
जाम्बवानङ्गदश्चैव हनुमांश्च तथाष्टमः ॥
बाली नल: क्रमादेतैर्दशभि: फलमादिशेत् ॥ २७ ॥

चक्र २७
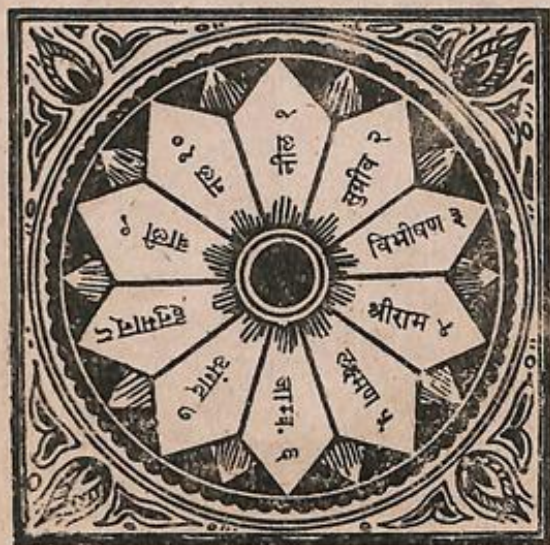
जो मनुष्य गर्भ में पुत्र है या पुत्री, यह जानना चाहे तो वह इस चक्र के नाम के अनुसार फल जान ले ॥ २७ ॥

अथ चिन्तापरीक्षा

दुर्योधनोऽजातशत्रुः भीमः कृष्णः फणीश्वरः ।
अर्जुनः सहदेवश्च नकुलो दुष्टशासनः ।।
गंगापुत्रो यथापूर्वं फलमेभिर्विचारयेत् ।। २८ ।

चक्र २८

जो मनुष्य किसी प्रकार की चिन्ता करके उसके सिद्ध होने
परीक्षा करना चाहे, वह ऊपर लिखित चक्र के नाम के अनुसार शु
शुभ फल का ज्ञान कर ले ।। २८ ।।

अथ बन्धनपरीक्षा

श्रीकृष्णो बलभद्रश्च प्रद्युम्नो ह्यनिरुद्धकः ।
साम्बो रतिपतिश्चैव गरुडः शङ्करस्तथा ॥
गणेशः कार्तिकेयश्च क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ २९ ॥

चक्र २९

जो मनुष्य बन्धन (जेल) से छूटने या न छूटने की परीक्षा करना चाहे वह इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अंकानुसार छूटना या बन्धन जान ले ॥ २९ ॥

अथ विश्वासपरीक्षा

आदौ सनकसानन्दौ वसिष्ठजनकौ तथा ।
मिथिलो गोरखश्चैव ह्यङ्गदांगिरसौ तथा ॥
दुर्वासा नारदश्चैव फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥ ३० ॥

चक्र ३०

जो मनुष्य किसी काम के लिए, किसी के विश्वास की परीक्षा करना चाहे, वह इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अंकानुसार अनुकूल या प्रतिकूल फल जान ले ॥ ३० ॥

अथ विद्यापरीक्षा

श्री रामो लक्ष्मणश्चैव जाम्बवानङ्गदस्तथा ।
हनुमद्वालिनौ नीला नलः सुग्रीवकस्तथा ।।
विभीषणः क्रमादेतत्फलं सर्वमुदाहरेत् ।। ३१ ।।

चक्र ३१

जो मनुष्य विद्या होने न होने का ज्ञान करना चाहे, तो इस चक्र के नामों के अंकानुसार विद्या-प्राप्ति या अप्राप्ति का ज्ञान कर ले ।। ३१ ।।

अथ दूतपरीक्षा

सानन्दः सनकश्चैव दुर्वासा जनकस्तथा ।
वसिष्ठो मिथिलश्चैव गोरखोऽगस्त्य एव च ॥
अङ्गिरा नारदश्चैव क्रमादेतैर्विचारयेत् ॥ ३२ ॥

चक्र ३२

जो मनुष्य दूत (गोइन्दा) रखने की परीक्षा करना चाहे, तो इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अंकानुसार दूत रखने का शुभाशुभ फल जान ले ॥ ३२ ॥

अथ सम्बन्धपरीक्षा

दुर्वासाश्च वसिष्ठश्च मिथिलो गोरखस्तथा ।
अगस्त्यश्चाङ्गिराश्चैव नारदो जनकस्तथा ॥
ततः सनकसानन्दौ क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ ३३ ॥

चक्र ३३

जो मनुष्य किसी के सम्बन्ध (शादी वगैरह) करने की इच्छा करे, वो इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अंकानुसार इच्छित सम्बन्ध का शुभाशुभ फल जान ले ॥ ३३ ॥

अथ राज्यपरीक्षा

दुर्वासा नारदश्चैव सानन्दः सनकस्तथा ।
जनकश्च वसिष्ठश्च मिथिलो गोरखस्तथा ॥
अगस्त्यश्चाङ्गिराश्चैव यथोक्तफलमादिशेत् ॥ ३४

चक्र ३४

किसी मनुष्य को राजा होने या खरीदने अथवा राज्य का अधि-कार प्राप्त करने की परीक्षा करनी हो, तो इस चक्र के नामों के अंकानुसार लाभ या हानिकारक फल जान ले ॥ ३४ ॥

अथ सन्तानपरीक्षा

विभीषणश्च सुग्रीवः श्रीरामो लक्ष्मणस्तथा ।
जाम्बवानङ्गदश्चैव हनुमद्वालिनौ नलः ॥
नीलादिभिः क्रमाद् ब्रूयाद्विचार्यं हि शुभाशुभम् ॥ ३५ ॥

चक्र ३५

जो मनुष्य सन्तान उत्पन्न होने की इच्छा करे, तो इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अंकानुसार इष्ट-अनिष्ट फल की परीक्षा कर ले ॥ ३५ ॥

अथ सञ्चयपरीक्षा

अंगिराः सनकश्चैव नारदो जनकस्तथा ।
सानन्दोऽत्रिसुतश्चैव वसिष्ठो मिथिलस्तथा ॥
गोरखोऽगस्त्यकश्चैव क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ ३६ ॥

चक्र ३६

जो मनुष्य धन के सञ्चय (बटोरने) की परीक्षा करना चाहे, तो इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अङ्कानुसार उसका शुभाशुभ फल जान-समझ ले ॥ ३६ ॥

अथ विवाहपरीक्षा

विभीषणो रामचन्द्रो लक्ष्मणो जाम्बवांस्तथा ।
अंगदो हनुमान् वाली नलनीलसुकण्ठकाः ॥
एतश्चक्रगतः सर्वं शुभाशुभफलं वदेत् ॥ ३७ ॥

चक्र ३७
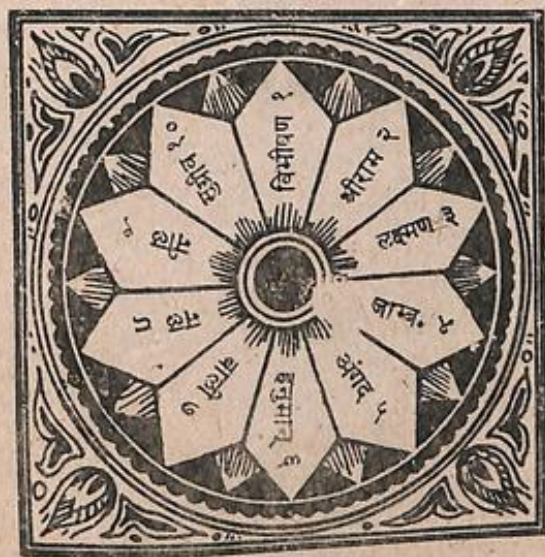
जो मनुष्य विवाह की इच्छा करे, तो इसमें अँगुली रखकर नामों के अक्षरानुसार शुभाशुभ फल की परीक्षा कर ले ॥ ३७ ॥

अथ विक्रयपरीक्षा

मिथिलो गोरखश्चैव ह्यगस्त्याङ्गिरसौ तथा ।
नारदो जनकश्चैव सानन्दस्तु वसिष्ठकः ॥
दुर्वासाः सनकश्चैव क्रमादेतैः फलं वदेत् ॥ ३८ ॥

चक्र ३८
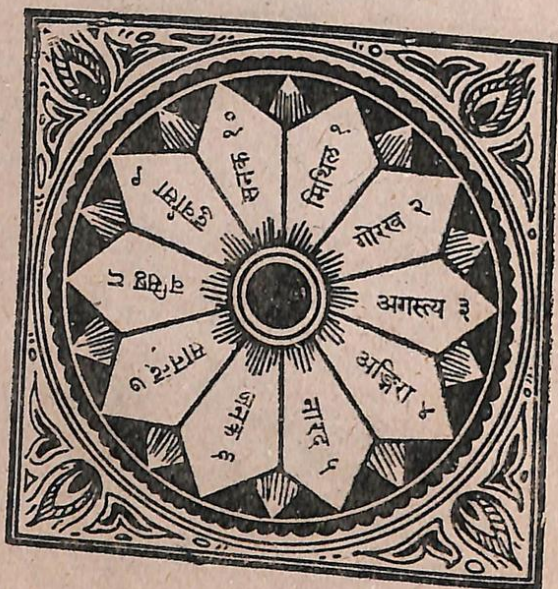
जो मनुष्य किसी वस्तु के विक्रय (बेचने) की इच्छा करे, तो इस चक्र के अङ्कानुसार विक्रय से लाभ-हानि का ज्ञान कर ले ॥ ३८ ॥

अथ प्रणयपरीक्षा

जनको ह्यङ्गिराश्चैव दुर्वासा गोरखस्तथा ।
अगस्त्यः सनकश्चैव नारदो मिथिलस्तथा ।।
तथा वसिष्ठ सानन्दो जानीयाच्च शुभाशुभम् ।। ३९ ।।

चक्र ३९
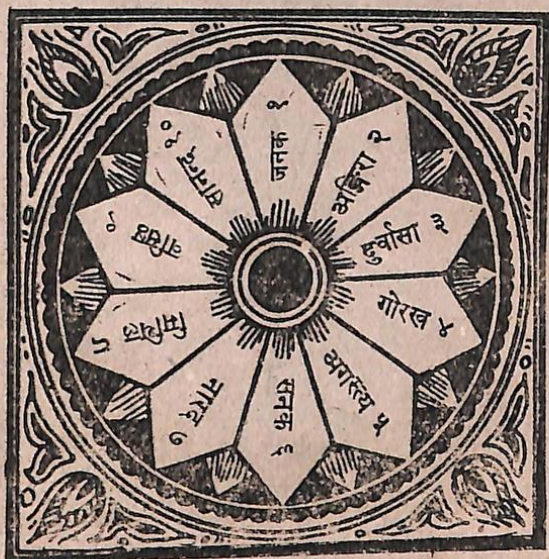
जो मनुष्य किसी के प्रणय (प्रेम) की इच्छा करे, तो इस चक्र के नामों के अङ्कानुसार प्रणय से सुख-दुख का ज्ञान कर ले ।। ३९ ।।

अथ कुशलपरीक्षा

महादेवो गणेशश्च साम्बः श्रीकृष्ण एव च ।
बलभद्रः कार्तिकेयः प्रद्युम्नस्तत्सुतस्तथा ॥
कामदेवश्च गरुडः क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ ४०

चक्र ४०

जो मनुष्य कुशल की इच्छा करे, तो वह इस चक्र के नामाें अङ्कानुसार कुशल या अकुशल का ज्ञान कर ले ॥ ४० ॥

॥ इति हनुमज्ज्यौतिष चक्रावली समाप्त ॥

अथ गोरखकथनम्

ग्राहको विक्रयश्चैव सङ्ग सम्बन्धकस्तथा।
विश्वासः प्रणयश्चैव दूतो राज्यं च सञ्चयः॥
स्वस्थानं च क्रमेणैव फलानि कथितानि वै॥ १॥

श्री गोरखनाथ का वचन

१ ग्राहक जो इच्छा करता है, वह न होगा।
२ यह चीज़ आखीर तक कभी न बिकेगी।
३ इस विषय में वर्णन करने से अच्छा होगा।
४ ग्राम अथवा बस्ती के पश्चिम उत्तर में सम्बन्ध करने की बातचीत हो रही है, सो हो जायगी।
५ इस मनुष्य को विश्वास करोगे तो पीछे कुशल होगा और रक्षा पाओगे।
६ प्रेम करने पर अधिक क्लेश होगा।
७ उस स्थान में दूत भेजने से शीघ्र कार्य सिद्ध होगा।
८ इस राज्य में भाग्य के दोष से उपद्रव होगा।
९ सञ्चय (बटोरना) करने में कष्ट तो है, पर चिन्ता न करो, भला होगा।
१० अपने इस विचार को छोड़ने से उपद्रव होगा।

अथ श्रीरामचन्द्रकथनम्

विद्या विवाहो सन्तानगर्भाश्चागमनानि च।
गंगाप्राप्तिर्गमश्चैव कृषिकर्म तथैव च॥
वाणिज्यमपवादश्च एतच्चिन्त्यं शुभाशुभम्॥ २॥

अथ श्रीरामचन्द्रजी का वचन

१ विद्या पढ़ना बड़ा मुश्किल है, परिश्रम करने से कुछ सम्भव है।
२ बस्ती के दक्षिण दिशा में नदी पार कुछ देर में विवाह होगा।
३ पुत्र की इच्छा बहुत कठिनता से शायद सिद्ध होगी।

४ इस गर्भ से अच्छा पुत्र उत्पन्न होगा। निश्चय समझो।
५ दक्षिण तरफ तुम जाने की इच्छा करते हो, इस समय जाना होगा।
६ गंगाप्राप्ति की तुम्हारी इच्छा निस्सन्देह सिद्ध होगी।
७ वह पूरब दक्षिण ओर गया है, आने में विलम्ब है।
८ खेती करो, परन्तु जल का कष्ट होगा।
९ रोजगार अच्छा न होगा; मूल में भी हानि होगी।
१० इस उपद्रव से देर में छूटेगा।

अथ लक्ष्मणकथनम्

अपवादोद्वाहविद्याः सन्तानो गर्भ एव च।
गमनागमनं चैव गंगाप्राप्तिस्तथैव च॥
कृषिकर्म च वाणिज्यं जानीयाच्छुभ लक्षणम्॥ ३॥

श्रीलक्ष्मणजी का वचन

१ अपवाद से जो दुःख है वह शीघ्र दूर होगा।
२ विवाह घर से पूरब तरफ होगा, पर कुछ देर है।
३ पढ़ने से विद्यालाभ शीघ्र होगा।
४ कुछ दिन के बाद बहुत पुत्र होंगे।
५ इस गर्भ से भाग्यवान् पुत्र होगा, यह निश्चय जानो।
६ मनुष्य पूरब दक्षिण तरफ घूम रहा है, वहाँ कुशल से होगा।
७ वह मनुष्य पूरब दक्षिण जाने की इच्छा कर रहा है, तो अच्छा न होगा।
८ गंगा के प्राप्त होने की तुम्हारी इच्छा सिद्ध होगी।
९ खेती करो, लाभ खूब होगा, निश्चय समझो।
१० व्यापार करने से अधिक धन प्राप्त होगा, निश्चय जानो।

अथ अंगदकथनम्

अपवादः कृषिवाणिज्यौ विद्यालाभस्तथैव च।
उद्वाहा गर्भप्राप्तिश्च गमनागमनं तथा॥
गंगाप्राप्तिक्रमेणैव फलानि दश कीर्तयेत्॥ ४॥

अंगद का वचन

१ तुमको जो अपवाद (कलंक) लगा है, वह कुछ द्रव्य खर्च करने से दूर होगा।
२ तुम खेती करो, अधिक लाभ होगा।
३ अपने द्रव्य से व्यवहार करना चाहते हो तो करो; लाभ होगा।
४ विद्या पढ़ने से अवश्य अधिक लाभ होगा।
५ अपना स्थान तुमको मिलेगा, कुछ लाभ होगा।
६ विवाह अपने ही देश में बस्ती के पूर्व होगा।
७ इस गर्भ से अवश्य पुत्र उत्पन्न होगा, यह समझो।
८ वह समीप ही में घूम रहा है।
९ बहुत समीप जाओगे, तो अच्छा होगा।
१० गंगा की प्राप्ति अति विचित्रता से तुमको होगी।

अथ जाम्बवत्कथनम्

वाणिज्यमपवादश्च विद्योद्वाहश्च सन्ततिः।
गर्भचिन्ता तीर्थमृत्युर्गमनागमनं तथा॥
कृषिकर्मान्तिकं चैव विचार्यं तत्सुधीमता॥ ५॥

जाम्बवान् का वचन

१ अपने धन से व्यापार करना चाहते हो तो करो, लाभ होगा।
२ वह कलंक तुम्हारा दूर होगा, चिन्ता न करो।
३ जो विद्या तुम पढ़ोगे, वह शीघ्र सफल होगी।
४ व्यापार तुम्हारा शीघ्र होगा।
५ तुमको एक कन्या होगी।
६ इस गर्भ से भाग्यवती लड़की उत्पन्न होगी।
७ तुम्हारी मृत्यु गंगा के पूर्व में होगी।
८ तुम दक्षिण पूर्व की तरफ जाने की इच्छा करते हो, वह करो अच्छा फल मिलेगा।
९ वह प्राणी उत्तर पूर्व दिशा को गया है, सोच मत करो।
१० कृषि (खेती) करो; अति उत्तम होगा।

अथ बालिकथनम्

गमनं जाह्नवीप्राप्तिः कृषिर्व्यापार एव च ।
विद्यापवादो द्रोहश्च सन्तानं गर्भ एव च ॥
आगमश्चात्र विज्ञेयः फलादेशो शुभः स्मृतः ॥ ६ ॥

बालि का वचन

१ दक्षिण दिशा को जाने की तुम्हारी इच्छा है, वह होगी, अच्छा नहीं है ।
२ तुमको गंगाप्राप्ति मरने पर होगी ।
३ खेती तुम न करो, लाभ न होगा ।
४ पास की जमा से तुम व्यापार मत करो, उसमें अवश्य हानि है ।
५ विद्या की प्राप्ति होना सम्भव नहीं है ।
६ इस अपवाद से तुमको निश्चय कलंक होगा ।
७ तुम्हारा विवाह कभी न होगा ।
८ तुमको अभी सन्तान नहीं होगी ।
९ इस स्त्री के गर्भ में सन्तान है ।
१० वह प्राणी पूर्व की ओर गया है, अभी न आएगा ।

अथ हनुमत्कथनम्

आगमः कर्षणं कर्म वाणिज्यमपवादकः ।
विद्या विवाहः सन्तानं गर्भचिन्ता तथैव च ॥
गंगाप्राप्तिश्च गमनं यः प्रश्नस्तत्फलं वदेत् ॥ ७ ॥

हनुमान् का वचन

१ वह मनुष्य पूर्व-दक्षिण की तरफ गया है, शीघ्र आएगा ।
२ खेती तुमको अच्छी होगी ।
३ तुम्हारा पशु, पक्षी, जीवों का व्यापार करने का भाव है, सो करो, अच्छा लाभ होगा ।
४ वह अपवाद तुम्हारा दूर होगा, पर कुछ व्यय करो ।
५ विद्याभ्यास तुम करो, परन्तु विलम्ब से प्राप्ति होगी ।
६ तुम्हारा विवाह होगा, पर कुछ देर है ।
७ उत्तम लड़का तुमको होगा, चिन्ता मत करो ।
८ इस गर्भ से भाग्यवान् पुत्र होगा ।

९ तुमको गंगा का लाभ होगा।
१० पूर्व दिशा में गमन करने की तुम्हारी इच्छा है, वह करो; लाभ होगा।

अथ नीलकथनम्

गर्भप्रश्नश्च गमनं गङ्गाप्राप्तिर्गमस्तथा।
कृषिकर्म च वाणिज्यं नादविद्योपयामकाः॥
सन्तत्यवाप्तिर्यस्यास्ति प्रश्नस्तस्य फलं वदेत्॥ ८॥

नील का वचन

१ इस गर्भ से लड़की उत्पन्न होगी।
२ वह प्राणी उत्तर दिशा की ओर गया है, देर में आएगा।
३ तुमको गंगा का लाभ कण्ठ बन्द होने पर होगा।
४ उत्तर दिशा को जाओगे, तुम्हारा कार्य देर से होगा।
५ खेती करो, वृष्टि होगी, फल थोड़ा होगा।
६ जीविका रोजगार मत करो, लाभ न होगा।
७ तुम्हारा झगड़ा देर से छूटेगा।
८ विद्याभ्यास करो, अल्प फल होगा।
९ तुम्हारा विवाह बस्ती के उत्तर तरफ होगा।
१० कन्या सन्तति तुमको अच्छी होगी।

अथ नलकथनम्

गङ्गाप्राप्तिश्च गमनमागमः कृषिरेव च।
वाणिज्यमपवादश्च विद्योद्वाहश्च सन्ततिः॥
गर्भचिंता प्रयत्नेन फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम्॥ ९॥

नल का वचन

१ गंगा का लाभ ज्ञान रहते होगा।
२ तुम समीप देश में गमन करना चाहते हो, शीघ्र करो; लाभ होगा।
३ वह मनुष्य पूर्व दिशा में गया है, शीघ्र आएगा।
४ खेती करने से अन्न अधिक होगा।
५ मूलद्रव्य से तुमने रोजगार करने की इच्छा की है उससे अधिक लाभ है।
६ तुम्हारा कष्ट एक सप्ताह में दूर होगा।

७ शास्त्रों का अध्ययन करो तो अधिक लाभ होगा।
८ तुम्हारा विवाह पूर्व दिशा में शीघ्र होगा।
९ तीन सन्तान तुमको होंगी, चिन्ता मत करो।
१० इस गर्भ से तुमको राजा के समान पुत्र होगा।

अथ विभीषणकथनम्

विवाहे दुहितुश्चिन्ता गर्भमागमनं तथा।
गङ्गाप्राप्तिश्च गमनं कृषिर्वाणिज्यकं तथा॥
अपवादश्चैव विद्यामेतेषां फलमादिशेत्॥ १०॥

विभीषण का वचन

१ ग्राम के दक्षिण ओर तुम्हारा विवाह होगा, किन्तु कुछ देर है।
२ कन्या तुमको उत्पन्न होगी, परन्तु देर है।
३ उत्तम कन्या तुमको इस गर्भ से होगी।
४ वह प्राणी दक्षिण की ओर गया है, शीघ्र आएगा।
५ अवश्य ही तुमको गंगा लाभ होगा।
६ दक्षिण दिशा को तुम्हारी जाने की इच्छा है, शीघ्रता करो, सिद्ध होगा।
७ कार्य करो; लाभ होने से कुछ देर है।
८ इस कार्य में सफलता मिलेगी।
९ तुम्हारा कलंक शीघ्र ही छूटेगा।
१० अध्ययन करो, किन्तु विलम्ब से सिद्धि होगी।

अथ सुग्रीवकथनम्

सन्तानं गर्भचिन्तां वा गङ्गाप्राप्तिस्तथैव च।
गमनागमनं चैव कृषिर्लाञ्छनमेव च॥
वाणिज्यविद्योपयमाः शुभाशुभमुदाहरेत्॥ ११॥

सुग्रीव का वचन

१ शिवजी की कृपा से तुमको सन्तान होगी, किन्तु कुछ देर है।
२ इस गर्भ से अति भाग्यवान् पुत्र होगा।
३ तुमको गंगा की प्राप्ति में सन्देह मालूम होता है।
४ उत्तर की ओर जाने से लाभ नहीं होगा।

५ वह प्राणी वायव्य (पश्चिमोत्तर) दिशा में गया है, देर से आएगा ।
६ खेती करोगे तो कठिनता से थोड़ा लाभ होगा ।
७ इस कलंक से तुमको अपवाद होगा ।
८ तुम्हारी धातुद्रव्य के रोजगार करने की इच्छा है, वह मत करो ।
९ तुमको विद्या बड़े परिश्रम से होगी ।
१० ग्राम से उत्तर दूसरे देश में शादी होगी ।

अथ बलभद्रकथनम्

मनस्कामो बन्धनं च रोगोद्योगशुभानि च ।
धनं मृत्युश्च साहित्यं वासः सेवा विचारयेत् ॥ १२ ॥

बलभद्र का वचन

१ तुमको होनेवाली बात कही और मन की चिन्ता है सो बहुत शीघ्र सिद्ध होगी ।
२ तुम्हारा बन्धन शीघ्र जबरदस्ती से छूटेगा ।
३ तुम्हारी नाड़ी में पित्त का अधिक कोप है, वह जल्द शान्त होगा ।
४ अनेक प्रकार का रोजगार तुमको अभी से होगा ।
५ वह कुशल-क्षेम से है, चिन्ता न करो ।
६ शीघ्र कुछ धन तुमको मिलेगा, ऐसा ज्ञात होता है ।
७ तुम अवश्य शीघ्र मरोगे ।
८ सहायता करने में अच्छा शुभ होगा ।
९ इस स्थान से तुमको अवश्य ही शीघ्र जाना पड़ेगा ।
१० तुम्हारी भगवान् की पूजा करने की इच्छा है, सो करो, शुभ होगा ।

अथ श्रीकृष्णकथनम्

बन्धनं रोग उद्योगः कुशलं मृत्युरेव च ।
सेवा साहित्यवादश्च धनं च मनसेप्सितम् ॥
क्रमाच्छुभाशुभं सर्वमेतेषां फलमादिशेत् ॥ १३ ॥

श्रीकृष्ण का वचन

१ तुम्हारी छुट्टी अब शीघ्र होगी ।
२ तुमको कफ का रोग है अच्छा होगा, ठाकुरजी को नैवेद्य अर्पित करो ।
३ तुमको अनेक व्यापार होंगे, परन्तु विलम्ब है ।
४ कुशल-समाचार आनन्द से देखा जाता है ।

५ अभी तुमको मरने में देर है।
६ तुम्हारी भगवान् की पूजा करने की भावना है, सो करो, शुभ होगा
७ सहायता करो, शत्रु नहीं है, मित्र है।
८ वहाँ निवास करो, दोस्त का स्थान है, झगड़ा न करना।
९ किसी पुरुष से तुमको कुछ मिलेगा, परन्तु देर है।
१० तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी, परन्तु कुछ देर है।

अथ अनिरुद्धकथनम्

वासो धनं मनः कामो बन्धनं रोग एव च।
उद्यमं चेष्टदेवस्य सेवा कुशलमेव च॥
साहित्यं निधनप्रश्नः फलं ब्रूयाद्यथायथम्॥ १४॥

अनिरुद्ध का वचन

१ इस स्थान में निवास करने से तुम्हें लाभ न होगा।
२ कुछ धन तुमको मिलेगा, परन्तु विलम्ब है।
३ होनेवाले काम की इच्छा करते हो सो शीघ्र पूर्ण होगा।
४ यह बन्धन तुम्हारा विलम्ब से छूटेगा, सोच न करो।
५ पित्त की अधिकता का रोग तुमको है, सो छूटेगा, चिन्ता न करो।
६ व्यापार तुमको अच्छा मिलेगा, परन्तु कुछ विलम्ब है।
७ अपने इष्ट देवता का चिन्तन करो, तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।
८ वहाँ का समाचार अच्छा है, सोच मत करो।
९ तुम्हारी मृत्यु समीप है।
१० सहायता करो, कल्याण होगा।

अथ प्रद्युम्नकथनम्

धनं मनोभीप्सितं च बन्धनं रोग एव च।
उद्यमो मृत्युचिन्ता च कुशलं देवसेवनम्॥
साहित्यं वसतिर्ज्ञेया ब्रूयादेतत्फलं शुभम्॥ १५॥

प्रद्युम्न का वचन

१ अपने मूलधन से रोजगार करोगे तो शीघ्र अच्छा लाभ होगा।
२ अन्न, जल आदि वस्तुदान करने की तुम्हारी इच्छा है, सो पूरी होगी
३ तुम्हारा बन्धन अधिक उद्योग से दूर होगा।

४ तुमको कफ से मिला हुआ रोग है, वह बड़ी कठिनाई से छूटेगा।
५ तुम्हारा व्यापार अति शीघ्र होगा।
६ तुम मरोगे, ईश्वर की चिन्ता करो।
७ तुम्हारा भला होगा, शोक मत करो।
८ तुम्हारी किसी देवता की सेवा करने की चिन्ता है, तो करना; लाभ होगा।
९ तुम्हारा साथ करने के योग्य वही है सो भला होगा।
१० इस स्थान पर रहने से राजा के सदृश सुख पाओगे।

अथ कामदेवकथनम्

सेवासाहित्यवासाश्च धनचिन्ता तथैव च।
मनः कामो बन्धनं च रोगोद्योगसुखानि च॥
मृत्यु चिन्ता भवेत्तेषां तेभ्योऽदः फलमादिशेत्॥१६॥

कामदेव का वचन

१ तुम देवता की आराधना करना चाहते हो, सो सुफल होगा।
२ साहित्य करने से तुमको विलम्ब होगा।
३ वहाँ रहने की तुम्हारी इच्छा है, निवास करो, लाभ होगा।
४ धातु के रोजगार से तुमको कुछ धन मिलेगा।
५ तुमको धातु की चिन्ता है, सो पूरी होगी।
६ तुम्हारा वह बन्धन छूटता है।
७ तुम इस समय रोगग्रस्त हो, अपने देश जाओ, वहाँ अच्छे हो जाओगे।
८ व्यापार तुम्हारा एक समय अच्छा चला था।
९ वह जीव कुछ दुःखी है, यह मालूम होता है।
१० तुमको मृत्यु के समान चिन्ता बढ़ी हुई है, सो अब छूटनेवाली है, दान करो, धर्म करो।

अथ साम्बकथनम्

साहित्यं वासकार्यं च कुशलं मनसेप्सितम्।
बन्धनं रोग उद्योगो निधनं सेवनं तथा॥
धनचिन्ता च यस्यैते प्रश्नास्तेषां फलं वदेत्॥१७॥

साम्ब का वचन

१ तुम साहित्य की सेवा करो, वह संग देगा, ऐसा मालूम देता है।
२ इस जगह तुमको निवास करने से अच्छा लाभ होगा, सो यहाँ निवास करो।
३ तुम्हारे कुशल की बात यहाँ के लोगों से पूर्व दक्षिण दिशा को जायगी।
४ गाँव के पूर्व दक्षिण तरफ जाने की इच्छा है।
५ बड़े दुःख से तुम्हारा बन्धन छूटेगा।
६ तुमको मध्य और दक्षिण नाड़ी में वात पित्त अधिक है, वह रोग कष्ट साध्य है।
७ व्यापार तुमको मिलेगा, शीघ्र विदेश जाओ।
८ तुम जल्द मरोगे।
९ तुम्हारी शिवजी की मानसिक सेवा करने की इच्छा होती है, सो करो, अधिक लाभ होगा।
१० ग्राम के दक्षिण के कोने पर जाओ, धन मिलेगा।

अथ महादेवकथनम्

कुशलं मृत्युचिन्ता च धनचिन्ता तथैव च।
साहित्यसेवावासाश्च मनःकामाश्च बन्धनम्॥
उद्यमो दशमः प्रोक्तो विचार्य गलमादिशेत्॥ १८॥

श्री महादेव का वचन

१ उस स्थान पर सब कुशल है।
२ तुम अभी न मरोगे, सब सुख भोगकर मरोगे।
३ ब्राह्मण तथा मित्र से तुमको कुछ धन मिलेगा।
४ शीघ्र ही तुम उसका सङ्ग करो, राजयोग है।
५ तुम पार्थिवपूजन करो, कल्याण होगा।
६ इस स्थान के निवास से राजसुख पाओगे।
७ तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा।
८ बन्धन तुम्हारा छूट जायगा।
९ दक्षिण और वाम नाड़ी में तुमको कफपित्ताधिक्य है, शीघ्र छूटेगा।
१० अच्छा व्यापार होगा, चिन्ता मत करो।

अथ गणेशकथनम्

उद्योगः कुशलं नित्यं मृत्युः सेवा स्थितिस्तथा ।
धनप्राप्तिश्च साहित्यं मनः कामस्तथैव च ॥
बन्धनम् व्याधिसाहित्यमेतेषां फलमादिशेत् ॥ १९ ॥

श्री गणेश का वचन

१ देर से तुम्हारा व्यापार होगा ।
२ कल्याण के लिए उस स्थान की इच्छा तुमको है ।
३ कुछ विलम्ब से तुम्हारी मृत्यु होगी ।
४ जीने की इच्छा यदि तुमको है तो भगवान् की पूजा करो ।
५ अधिक विलम्ब से तुमको कुछ धन मिलेगा ।
६ वहाँ तुमको बड़ा कष्ट होगा ।
७ सहायता करना, अधिक भलाई पाओगे ।
८ किसी धातु की इच्छा तुमको है, सो विलम्ब है ।
९ बन्धन तुम्हारा विलम्ब से छूटेगा ।
१० तुम्हारी नाड़ी में कुछ रोग है, अधिक देर है, अधिक देर से छूटेगा और अधिक कष्ट होगा ।

अथ कार्तिकेयकथनम्

व्याध्युद्योगौ सेवनं च मृत्युः साहित्यमेव च ।
कुशलं वसतिर्द्रव्यं मनोभिलषितं तथा ॥
बन्धनं च विजानीयाच्छुभाशुभफलं वदेत् ॥ २० ॥

कार्तिकेय का वचन

१ पित्त की अधिकता तुमको है, उपाय करो, शीघ्र छूटेगी ।
२ व्यापार तुम्हारा विलम्ब से होगा ।
३ भगवती की आराधना तुम करो, कल्याण होगा ।
४ रोग तुमको अधिक प्रबल है, विलम्ब से मरोगे ।
५ अब सहायता का समय नहीं है, करने से हानि होगी ।
६ शुभ वृत्तान्त है, सोच मत करो ।
७ वहीं निवास करो, अवश्य लाभ होगा ।

८ कुछ धन तुमको मिला है और भी मिलेगा।

९ जीव और धातु की इच्छा है वह देर से पूरी होगी

१० बन्धन तुम्हारा शीघ्र ही छूटेगा, पर खर्च होगा।

अथ गरुड़कथनम्

निधनं सेवनं वासो धनचिन्ता मनोरथः।
बन्धनं व्याधिरुद्योगः साहित्यं कुशलं तथा॥
विचार्य फलमेतेषां पृच्छकाय निवेदयेत्॥ २१॥

गरुड़ का वचन

१ तुम्हारी मृत्यु समीप है, पर सत्यव्रत से न मरोगे।

२ धातु की प्रतिमा की पूजा करो, कल्याण होगा।

३ वहाँ निवास करने से पीड़ा होगी।

४ धन की अभिलाषा तुमको है, परन्तु न मिलेगा।

५ तुमको धातु की चिन्ता और भावी कर्म के फल की अभिलाषा है, अधिक विलम्ब से सिद्ध होगा।

६ तुम्हारा देहबन्धन बड़ी कठिनता से छूटेगा और कष्ट भी बहुत होगा।

७ तुम्हारी नाड़ी में पित्ताधिक्य और प्रमेहाधिक्य रोग है, अधिक कष्ट से छूटेगा।

८ रोजगार तुम्हारा कोई न होगा, खर्च होगा।

९ साहित्य करने में देर से कुछ लाभ होगा।

१० वहाँ की खबर अच्छी है, शत्रु पकड़ा जायगा।

अथ अर्जुनकथनम्

पृष्ठलग्नोरिमुक्तिर्वै मिलनं सङ्ग एव च।
विवादः समरश्चिन्त मन्त्री याञ्चा धनागमः॥
नष्टद्रव्यस्य सम्प्राप्तिर्गमश्चैव फलं वदेत्॥ २२॥

अर्जुन का वचन

१ शत्रु तुमसे परास्त होगा, भय मत करना।

२ मित्र से मिलाप तुमको देर से होगा।

३ तुम्हारा यह मित्र है, इसका साथ कर लो, सोच मत करो।

४ इस समय विवाद मत करना, तुम्हारा मित्र है।
५ उसके साथ लड़ाई मत करना, तुम्हारा मित्र है।
६ भावी कर्म की चाहना तुमको है, सो शीघ्र होगी।
७ मन्त्री करना तुमको उचित है, उससे भला होगा।
८ यहाँ माँगो, मिलेगा।
९ धन मिलने में अब तुमको देर नहीं है।
१० खरीदी हुई धातु तुम्हारी खो गई है, घर में खोजने से मिलेगी।

अथ युधिष्ठिरकथनम्

मन्त्री चिन्ता विवादश्च युद्धं नष्टधनं तथा।
मिलनं याचनं प्राप्तिः पृष्ठगामी विमोचनम्॥
सङ्गतिश्च तथैतेषां जानीयात्क्रमगं फलम्॥ २३॥

युधिष्ठिर का वचन

१ मन्त्री तुम मत करो, वह अति कुटिल है, पीछे शत्रु होगा, धोखा देगा।
२ धातु इत्यादि की चिन्ता तुमको है, शीघ्र छूटेगी।
३ उससे झगड़ा मत करो, पराजित होगे।
४ युद्ध करो तुम्हारी विजय होगी, सोच करने का काम नहीं है।
५ धातु द्रव्य तुम्हारा खो गया है, सो खोजो, उत्तर पश्चिम के घर में मिलेगा।
६ तुम्हारे साथी से मुलाकात जाते ही होगी।
७ याचना करने से प्राप्ति होगी।
८ सुखपूर्वक कार्य करो तुमको अधिक प्राप्ति होगी।
९ क्लेश मत करो, तुम्हारा पीछा शत्रु छोड़ेगा।
१० साथ करने से अच्छा नहीं है, साथ न करो।

अथ नकुलकथनम्

प्राप्तिर्नष्टधनं पृष्ठलग्नारिमिलनं तथा।
सङ्गो विवादो युद्धश्च चिन्ता मन्त्री च याचनम्॥
शुभाशुभफलं ज्ञेयं हनुमद्वचनं यथा॥ २४॥

नकुल का वचन

१ शीघ्र ही तुमको लाभ होगा।
२ सात साधु की चीज तुम्हारी खो गई है, सो मिलेगी।

३ शत्रु तुम्हारा पीछा छोड़ेगा, सोच न करो।
४ तमसे मेल होगा।
५ संग करो, तम्हारा भला होगा।
६ उससे झगड़ा करो, अवश्य विजयी होगे।
७ युद्ध से तुमको शीघ्र ही जय प्राप्ति होगी।
८ सोच तुम्हारा शीघ्र ही दूर होगा, संदेह न करो।
९ मन्त्री करो वह राजा के सदृश होगा।
१० मार्ग में अधिक लाभ होगा, सोच न करना।

अथ दुर्योधनकथनम्

.. च याञ्चा सम्प्राप्तिर्मन्त्री पृष्ठगता हिता।
नष्टद्रव्यं संगतिश्च मिलनं युद्धमुद्वहः॥
शुभाशुभफलं ज्ञात्वा क्रमात्सर्वं निवेदयेत्॥ २५॥

दुर्योधन का वचन

१ शोच तम्हारा दूर होगा, ऐसा ज्ञात होता है।
२ अवश्य याचना करो, मिलेगा सन्देह नहीं है।
३ लाभ अवश्य तुमको होगा, चिन्ता न करना।
४ पुरुष बुद्धिसागर होगा, इसको मन्त्री करो।
५ पीछा तुम्हारा छूटेगा, चिन्ता न करो।
६ खोई हुई तुम्हारी चीज अब न मिलेगी। उद्योग न करो।
७ उस मनुष्य का संग न करो, अच्छा न होगा, दुःख पाओगे।
८ उससे मुलाकात न होगी, वह धनाढ्य है।
९ वे सब बड़े बलवान् हैं, उनसे युद्ध न करना।
१० विवाह करने से दुःख होगा, ऐसा प्रतीत होता है।

अथ भीमकथनम्

युद्धसङ्गौ च मिलनं याञ्चा मन्त्री तथैव च॥
फलाफलं भवेद्भीमाद्विचार्य च पुनः पुनः॥ २६॥

भीम का वचन

१ जानवर तुम्हारा खो गया है, वह बड़े परिश्रम से मिलेगा।
२ शत्रु का पीछा करने से तुम्हारा कुछ न होगा, देर से छूटेगा।

३ तुम्हारा शोच देर से छूटेगा ।
४ अब भी तुमको कुछ प्राप्त न होगा ।
५ झगड़ा करने से तुमको कुछ भी फल न मिलेगा ।
६ विलम्ब से विजय प्राप्त होगी ।
७ उसका साथ करो, वह तुम्हारा मित्र है, चिन्ता नहीं ।
८ तुमसे उसका मेल होगा, परन्तु देर है ।
९ वह बड़ा बुद्धिमान् है, उससे माँगने से न मिलेगा ।
१० इसको मन्त्री बनाओ, तुम्हारा भला होगा ।

अथ सहदेवकथनम्

याञ्चा प्राप्तिश्च नष्टत्वं पृष्ठलग्नं विपक्षकः ।
मिलनं सङ्गतिश्चिन्ता विवाहः सौहृदं रणः ॥
एतत्फलं वदेल्लोके यत्र तत्र शुभाशुभम् ॥ २७ ॥

सहदेव का वचन

१ माँगने से अवश्य पाओगे ।
२ इस समय तुमको प्राप्ति होती है, और भी मिलेगा ।
३ मूल द्रव्य तुम्हारा खो गया है, और मिलेगा भी, सोच न करो ।
४ अधिक कष्ट देकर शत्रु तुम्हारा पीछा छोड़ेगा ।
५ तुमसे जिसका मेल होनेवाला है, वह ब्राह्मण है ।
६ इनके साथ से तुम्हारा भला न होगा ।
७ चिन्ता तुम्हारी विलम्ब से छूटेगी ऐसा जान पड़ता है ।
८ इसके साथ किसी तरह झगड़ा न करना ।
९ यह तुम्हारा मित्र नहीं है, दुष्ट बुद्धि देनेवाला है । सावधान !
१० उसके साथ तुम लड़ाई मत करना, परिणाम अच्छा न होगा ।

अथ गंगापुत्र (भीष्म) कथनम्

संगो युद्धश्च मिलनं याञ्चा सम्प्राप्तिसौहृदम् ।
पृष्ठलग्नं विपक्षश्च विवादो विजयस्तथा ॥
नष्टलब्धिश्च चिन्ता च भवेदेतच्छुभं फलम् ॥ २८ ॥

गंगापुत्र का वचन

१ अच्छी सोहबत तुम करोगे, ऐसा मालूम होता है।
२ युद्ध करने से तुम्हारी जय होगी।
३ इस समय उसके साथ तुम्हारा मेल न होगा।
४ वह माँगने से तुमको न मिलेगा।
५ अभी तुमको लाभ होगा ऐसा मालूम होता है।
६ इससे मित्रता करो, यह अधिक बुद्धिमान् है।
७ सावधान रहना, तुम्हारा पीछा अब न छूटेगा।
८ झगड़ा करने से तुमको जय मिलेगी, सोच न करो।
९ धातु द्रव्य तुम्हारा खो गया है, खोजने पर मिलेगा।
१० कुछ देर से तुम्हारी चिन्ता छूटेगी। घबड़ाइये नहीं।

अथ दुःशासनकथनम्

मिलनं संगतिर्याञ्चा नष्टद्रव्यं च सौहृदम्।
पृष्ठलग्नारिमुक्तिश्च विरोधः संगरस्तथा॥
चिन्ता च दशमी प्राप्तिः क्रमात्सर्वं विचारयेत्॥ २९॥

दुःशासन का वचन

१ उस मनुष्य के साथ शीघ्र ही तुम्हारी भेंट होगी।
२ इसका साथ करो, तुम्हारा भला होगा।
३ याचना करने से मिलाप होगा।
४ तुम्हारा धातु का द्रव्य खो गया है, कष्ट से मिलेगा।
५ उससे मित्रता करो, पश्चात् लाभ होगा, यह बड़ा बुद्धिमान् होगा।
६ तुम इस शत्रु के पीछे से शीघ्र छुट्टी पाओगे।
७ विवाद करो, अवश्य विजय प्राप्त होगी।
८ युद्ध करो, शुभ होगा, सोच न करो, साहस करो।
९ यह सोच तुम्हारा शीघ्र ही छूटेगा।
१० अब तुमको विशेष लाभ होगा।

अथ अहिवरकथनम्

विरोधो मात्ययुद्धानि संगश्चिन्ता च याचनम् ।
सम्प्राप्ति मलनं नष्टं पृष्ठतारिविमोचनम् ॥
शुभाशुभ फलं ज्ञात्वा क्रमात्सर्वं निवेदयेत् ॥ ३० ॥

अहिवर का वचन

१ वह तुम्हारा बड़ा मित्र है, उसके साथ विरोध न करना ।
२ मन्त्री मूर्ख है, उससे कार्य सिद्ध न होगा ।
३ युद्ध करने से बलहीन हो जाओगे । आगे यश है, पीछे पराजय होगी ।
४ तुम्हारा साथी बुद्धिहीन है, शुभ न होगा ।
५ तुम्हारी झूठी चिन्ता दूर होगी ।
६ माँगने से कुछ थोड़ा मिलेगा ।
७ लाभ तुमको कुछ देर से होगा, समझ लेना ।
८ खोया हुआ द्रव्य तुम्हारे घर में मिलेगा, खोजो ।
९ उस आदमी के साथ तुम्हारा मिलना देर में होगा ।
१० इसका पीछा करने से तुम्हारा कुछ भी न होगा, शीघ्र छूटेगा ।

अथ कर्णकथनम्

युद्धे विवादो मात्यश्च चिन्ता यात्राप्तिरेव च ।
नष्टं द्रव्यं विमोक्षश्च शत्रोर्मिलनसंगतौ ॥
प्रश्नोत्तराणि चैतानि कथनीयानि धीमता ॥ ३१ ॥

कर्ण का वचन

१ युद्ध करो, तुम्हारी जय बिना मन्त्री के होगी ।
२ इस मनुष्य से कभी झगड़ा मत करना ।
३ इस मन्त्री से तुम्हारा विरोध अधिक होगा ।
४ तुम्हारी इच्छा यही है, सो पूरी न होगी ।
५ माँगो, अवश्य कुछ मिलेगा ।
६ अब तुमको अच्छा लाभ होगा ।
७ तुम्हारा द्रव्य खोया है, तुम्हारे मित्रों के पास है, नहीं मिलेगा ।
८ तुम्हारा यह पीछा विलम्ब से छूटेगा ।

९ इसका साथ करो, चिन्ता नहीं है; परन्तु यह मूर्ख है।
१० तुम्हारे आदमी से मुलाकात केवल दर्शन ही से होगी।

अथ अङ्गिराकथनम

समयः प्रलयश्चैव ग्राहकाः क्रयविक्रयौ।
स्थानसम्बन्धशंकाश्च विश्वासः किंकरस्तथा॥
राजकार्यं तथैतानि फलानीमानि चादिशेत्॥ ३२॥

अङ्गिरा का वचन

१ इस समय तुम्हारा शुभ होगा, चिन्ता नहीं है।
२ इस आपत्ति से तुम सकुशल बचोगे।
३ तुम्हारी इस चीज की बिक्री देर से होगी।
४ इस द्रव्य को विलम्ब से बेचोगे तो लाभ होगा।
५ तुमको इस स्थान से जाना होगा।
६ तुम्हारा विवाह ग्राम से पूर्व दिशा में होगा।
७ इसमें किसी प्रकार का सन्देह तुम न करना।
८ इस पर विश्वास करने से कोई चिन्ता नहीं।
९ इस दूत को वहाँ भेजो, तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा।
१० लड़कों के खिलवाड़ सा तुम्हारा राजकार्य होता है, यह अच्छा नहीं।

अथ अगस्त्यकथनम्

स्वस्थानं ग्राहकश्चैव तथा च क्रयविक्रयौ।
सम्बन्धः प्रलयश्चिन्ता विश्वासः किंकरस्तथा॥
राजकार्यं क्रमादेतत्फलं सर्वमुदाहरेत॥ ३३॥

अगस्त्य का वचन

१ इस स्थान में रहने से भला होगा, इसको कभी न छोड़ना।
२ उस चीज के अधिक ग्राहक तुमको मिलेंगे।
३ उस द्रव्य को कुछ रोककर बेचोगे तो अधिक लाभ होगा।
४ इस द्रव्य को बेचो, लाभ देर से होगा।
५ तुम्हारी शादी बस्ती के पूर्व ग्राम में होगी।
६ अपना स्थान तुमको छोड़ना होगा, कारण यह है कि प्रलय होगा।

७ बिलकुल शोक मत करो, सब ठीक होगा।
८ इस पर विश्वास करो, कोई हानि न होगी।
९ इस दूत को वहाँ भेजो, काम होगा।
१० तुम्हारा राजकार्य बालकों के तुल्य है, अच्छा होगा।

अथ दुर्वासाकथनम्

सम्बन्धी राजचिन्ता च दूतः प्रलय एव च।
शंका च समयश्चैव स्वस्थानग्राहकक्रिया॥
विश्वासश्च क्रमादेतत्फलं ज्ञात्वा निवेदयेत्॥ ३४॥

दुर्वासा का वचन

१ इस स्थान में सम्बन्ध करने से तुम्हारा कल्याण न होगा।
२ इस रियासत में तुमको उत्पात होगा, भला नहीं।
३ इस स्थान में दूत भेजने से कार्य अवश्य नष्ट होगा।
४ इस आपत्ति से तुम्हारी रक्षा होगी, शोक न करो।
५ इसमें सोच न करो, निडर रहो।
६ इस समय तुम्हारा शुभ होगा।
७ इस स्थान को छोड़ दो, यह अच्छा नहीं।
८ तुमको ग्राहक अवश्य मिलेगा, सोच मत करो।
९ इस द्रव्य के बेचने से तुमको लाभ होगा।
१० इसके विश्वास से तुमको लाभ होगा।

अथ जनककथनम्

प्रलयः समयश्चैव विश्वासो दूत एव च।
राज्यलाभकरश्चैव सम्बन्धो ग्राहकस्तथा॥
स्वस्थानं च तथा गंगा ज्ञात्वैतत्फलमादिशेत्॥ ३५॥

जनक का वचन

१ इस आपत्ति से तुम्हारी रक्षा होगी, सन्देह नहीं है।
२ यह समय तुम्हारा अति कठिन है, मरण तुल्य है। सावधान!
३ इसको देने से फिर न मिलेगा।

४ उस स्थान में दूत भेजने से तुम्हारा कार्य न होगा।
५ राज्य की प्राप्ति तुमको नहीं होगी, यह मालूम होता है।
६ तुम्हारी वह वस्तु कभी न बिकेगी।
७ इस स्थान में सम्बन्ध करने से हानि होगी।
८ अब ग्राहक तुम्हारा न होगा, ऐसा मालूम होता है।
९ यह सगुन अच्छा नहीं है, इसको छोड़कर चले जाओ।
१० तुम्हारा कुछ भी नहीं है, सोच मत करो।

अथ नारदकथनम्

राज्येष्टं समयं स्थानं तथा ग्राहकविक्रयौ।
शंका प्रलयसम्बन्धः विश्वासः किंकरस्तथा॥
यथातथं फलं ब्रूयाच्छुभं वा यदि वाऽशुभम्॥ ३६॥

नारद का वचन

१ इस राज्य में तुम्हारा अधिक योग-क्षेम होगा।
२ यह समय तुम्हारा अति हर्ष से बितेगा।
३ इसी स्थान में तुमको आनन्द होगा, इसका त्याग न करो।
४ चिन्ता मत करो, वह तुम्हारा ग्राहक हुआ है।
५ वस्तु तुम्हारी बिक चुकी है, सोच मत करो।
६ यहाँ तुमको अवश्य शंका है।
७ गाँव के दक्षिण तुम्हारा सम्बन्ध हुआ है।
८ इस आफत से तुम्हारी रक्षा कठिन है। शिव की पूजा करो।
९ इसके विश्वास से तुम्हारा शुभ होगा।
१० उस स्थान में भेजो, अवश्य कार्य होगा।

अथ सनककथनम्

विश्वासदूतराज्यानि समयो ग्राहकस्तथा।
स्थानप्रलयचिन्ता च सम्बन्धो विक्रयस्तथा॥
शुभं वा यदि वाऽनिष्टं ज्ञात्वा फलमुदाहरेत्॥ ३७॥

सनक का वचन

१ उसका कभी विश्वास न करना, छोड़ने से न मिलेगा।
२ वहाँ दूत भेजो, कार्य सिद्ध होगा।

३ इस राज्य में तुमको अधिक लाभ होगा ।
४ यह समय तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है, सुख पाओगे ।
५ अब ग्राहक तुमको मिलेंगे ।
६ कुछ दिन बाद शुभ होगा, इस जगह को न छोड़ो ।
७ इस आफत से अवश्य बचोगे, सोच नहीं करना ।
८ इस कार्य में अधिक चिन्ता तुमको होती है ।
९ ग्राम के पूर्व ओर तुम्हारे विवाह की बात होती है, वहाँ जाओ ।
१० इस वस्तु की बिक्री अति शीघ्र होगी ।

अथ सनन्दनकथनम्

दूतप्रलयविश्वासो राज्यं समय एव च ।
विक्रेयवस्तु द्रव्यं च स्वस्थानं संगतिस्तथा ॥
सम्बन्धश्च तथा तेषां फलं सर्वं विचारयेत् ॥ ३८ ॥

सनन्दन का वचन

१ वहाँ दूत न भेजो, कार्य सिद्धि न होगी ।
२ इस आपत्ति से तुम्हारी रक्षा न होगी ।
३ इसके विश्वास से अच्छा न होगा ।
४ इस राज्य में तुमको सुख न मिलेगा ।
५ यह समय तुम्हारे लिए मृत्युतुल्य जान पड़ता है ।
६ यह वस्तु अब तुम्हारी बिकेगी ।
७ उस द्रव्य का लाभ तुमको न होगा ।
८ इस स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान को जाओ ।
९ उसके साथ से तुमको क्लेश होगा ।
१० उस जगह सम्बन्ध करने से तुम्हारा कल्याण न होगा ।

अथ वशिष्ठकथनम्

शंकासम्बन्धस्थानानि तथा विश्वासकिंकरौ ।
राज्यं च समयश्चैव विक्रयवस्तु धनस्य च ॥
ग्राहकः प्रलयश्चान्त्यं फलान्येतान्युदाहरेत् ॥ ३९ ॥

वशिष्ठ का कथन

१ यह सन्देह तुम्हारा झूठा है, क्या सोचते हो
२ इस सम्बन्ध से अन्त में तुमको दुःख होगा।
३ इस स्थान को छोड़कर अन्यत्र न जाना।
४ इसका विश्वास कदापि न करना, यह दुर्जन है।
५ उस स्थान में दूत भेजो, कार्य सिद्ध समझो।
६ इस राज्य में तुमको आनन्द होगा, कुछ सोच नहीं।
७ अब अच्छा समय तुम्हारा आया, यह ज्ञात होता है।
८ इस द्रव्य को बेचो, अच्छा लाभ होगा।
९ इस वस्तु का ग्राहक अब तुमको मिलेगा।
१० इस आपत्ति में कठिनता से प्राण-रक्षा होगी।

मिथिला कथनम्

शंकाविक्रयचिन्ताश्च वासः स्थानं तथैव च।
विश्वासः किंकरो राजसमयः प्रलयस्तथा॥
द्रव्याणां ग्राहको नूनं भविष्यति न संशयः।
एतेषां तु फलं ज्ञात्वा वदेत्सर्वं शुभाशुभम्॥ ४० ॥

मिथिला का कथन

१ तुम सोच करो, इसमें सन्देह कभी न होगा।
२ कुछ समय के अनन्तर इस द्रव्य के बेचने में तुमको लाभ होगा।
३ ग्राम के उत्तर दिशा में तुम्हारा सम्बन्ध हुआ है सो अच्छा होगा।
४ इस जगह को अवश्य छोड़ो, लाभ होगा।
५ उसके विश्वास से तुमको अच्छा फल मिलेगा।
६ उस स्थान में भेजो, अवश्य कार्य सिद्ध होगा।
७ इस राज्य में तुम्हारा कल्याण होगा, यही लक्षित होता है।
८ अल्प समय बीतने पर तुम्हारा कल्याण होगा, यही निश्चय होता है।
९ इस आपत्ति से शीघ्र रक्षा पाओगे, चिन्ता न करना।
१० वस्तु के अधिक ग्राहक मिलेंगे।

[इति हनुमज्ज्यौतिषं टीकासहितं समाप्तम्]

अथ काकचरित्रम्

नागार्जुन उवाच

काकस्य चरितं वक्ष्ये यथोक्तं मुनिभाषितम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण सर्वतत्त्वं लभेन्नरः ॥

अथ काकचरित्रम्

किसी समय नागराज (शेष) ने अर्जुन से पूछा कि महाराज! काक (कौवा) की भाषा से शुभ और अशुभ फल किस रीति से जाना जाता है। तब नागराज का प्रश्न सुनकर अर्जुन बोले कि हे सर्पराज, काक का सकल चरित्र विस्तारपूर्वक हम कहते हैं, सुनिये। दिन के घड़ी प्रमाण से काक की जो बोली सुनी जाती है उसी से शुभाशुभ फल जाना जायगा, जिसका विचार मुनियों ने कहा है, वह विस्तारपूर्वक है ॥

प्रातःकाले काकवचनम्

यदा प्रथमदण्डे पूर्वापार्श्वे 'अय अय' शब्दम् ।
रटति काकस्तदा पौरुषलाभवार्तां कथयति ॥ १ ॥

प्रातः समय की काकभाषा

प्रातःकाल एक घड़ी दिन से जो काक 'अय अय' शब्द करे, तो उस दिन बड़ा सुख होगा ॥ १ ॥

द्वितीयदण्डफलम्

यदा पञ्चदण्डे अग्निकोणे 'अय अय' शब्दम् ।
रटति काकस्तदा शोकवार्तां कथयति ॥
ऊर्ध्वमुखो वा रटति तदा दूरदेशतः ।
पुत्रतो वा शोकवार्त्तां कथयति ॥ २ ॥

दूसरी घड़ी का फल

दो घड़ी दिन में अग्निकोण की तरफ काक 'अय अय' शब्द करे तो शोक का उपस्थित होगा। परन्तु जब ऊपर मुख करके शब्द करे, तो दूर से शोक का समाचार आवेगा, यदि नीचे को मुख करके काक शब्द करे, तो पुत्र से शोक होगा ॥ २ ॥

तृतीयदण्डफलम्

तृतीयदण्डे दक्षिणदिशि 'मुय मुय' रवम्।
यदा रटति काकस्तदा वृत्तिलाभवार्तां कथयति ॥ ३ ॥

तीसरी घड़ी का फल

प्रातःकाल तीन घड़ी दिन चढ़े यदि काक दक्षिण दिशा में 'मुय मुय' शब्द बोले, तो जिसके मकान पर बोलेगा उसको अवश्य अकस्मात् कुछ धन मिलेगा ॥ ३ ॥

चतुर्थदण्डफलम्

नैर्ऋत्यकोणे चतुर्थदण्डे यदा 'मुय मुय' शब्दम्।
रटति काकस्तदा अग्निचौरभयं, तूर्ध्वमुखो वा ॥
काको राजतीऽन्यतो वा भयं कथयति ॥ ४ ॥

चौथी घड़ी का फल

प्रातःकाल के चार घड़ी दिन में काक जब नैर्ऋत्य कोण में 'मुय मुय' शब्द करे, तो चोर या अग्नि का भय हो। और ऊपर मुख करके बोले तो राज्य भय, नीचे मुख करके बोले तो दूसरा कुछ भय होगा ॥ ४ ॥

पञ्चमदण्डफलम्

'अहा अहा' रवं पञ्चमदण्डे पश्चिमदिशि।
यदा रटति काकस्तदा वृत्तिलाभवार्तां कथयति ॥
ऊर्ध्वमुखो रटति तदा विदेशतो धनलाभः।
अधोमुखो रटति तदाऽऽशु धनलाभः ॥ ५ ॥

पाँचवीं घड़ी का फल

पाँच घड़ी दिन को काक जब पश्चिम तरफ मुख करके 'अहा अहा' बोले तो मनुष्य को उस दिन धन की प्राप्ति होगी ॥ ५ ॥

षष्ठदण्डफलम्

'कहा कहा' षष्ठदण्डे समये पश्चिमदिशि।
यदा रटति काकस्तदा कार्यप्रदायकवार्तां कथयति ॥ ६ ॥

छठवीं घड़ी का फल

छः दण्ड दिन को यदि काक पश्चिम दिशा में 'कहा कहा' शब्द करे तो काम सिद्ध होने की बात जानना अर्थात् अभिलषित कार्य अवश्य सिद्ध होगा ॥ ६ ॥

सप्तमदण्डफलम्

सप्तमदण्डे वायुकोणे 'आहे आहे' रवम् ।
यदा रटति काकस्तदा व्याधितो मरणकथां कथयति ॥
सप्तमदण्डे उत्तरदिशि 'जा जा' रवम् ।
यदा रटति काकस्तदा अन्यवार्तां कथयति ॥ ७ ॥

सातवीं घड़ी का फल

सातवें दण्ड में दिन को वायुकोण में जो काक 'आहे आहे' रटे तो रोग से मृत्यु होगी । यदि सातवें दण्ड में दिन को 'जा जा' शब्द करे तो दूसरी भी कोई बात सुनने में आएगी ॥ ७ ॥

अष्टमदण्डफलम्

अष्टमदण्डे ऐशान्यां 'हा हा' रवम् ।
यदा रटति काकस्तदा मरणवार्तां कथयति ॥ ८ ॥

आठवीं घड़ी का फल

दिन की आठवीं घड़ी में यदि काक ईशानकोण पर 'हा हा' शब्द करे तो मृत्यु का सम्बन्ध जाने अर्थात् कहीं से मरने की खबर आएगी ॥ ८ ॥

नवमदण्डफलम्

नवमे दण्डे ब्रह्मस्थाने 'हा हा' रवम् ।
यदा रटति काकस्तदा प्रार्थनावार्तां कथयति ॥ ९ ॥

नवीं घड़ी का फल

नव घड़ी दिन से यदि काक मस्तक के ऊपर 'हा हा' शब्द करे तो उस दिन प्रार्थना की बात सुनने में आएगी ॥ ९ ॥

दशमदण्डफलम्

दशमे दण्डे सम्मुखे 'आवा आवा' रवम् ।
यदा रटति काकस्तदा शुभवार्तां कथयति ॥ १० ॥

दसवीं घड़ी का फल

दिन की १० वीं घड़ी में यदि काक 'आवा आवा' शब्द सामने रटे, तो समझना कि कोई शुभ बात कहता है ॥ १० ॥

एकादशदण्डफलम्

एकादशदण्डे अग्निकोणे 'भज भज' रवम्।
यदा रटति काकस्तदा पुत्रवार्तां कथयति ॥ ११ ॥

ग्यारहवीं घड़ी का फल

दिन की ११ वीं घड़ी में यदि काक अग्निकोण में 'भज भज' शब्द करे तो समझना कि पुत्र होने की बात कहता है ॥ ११ ॥

द्वादशदण्डफलम्

द्वादशदण्डे वायुकोणे 'जय जय' रवम्।
यदा रटति काकस्तदा शोकवार्तां कथयति ॥ १२ ॥

बारहवीं घड़ी का फल

दिन की १२ वीं घड़ी में वायुकोण में काक यदि 'जय जय' शब्द करे तो समझना कि शोक की बात कहता है ॥ १२ ॥

त्रयोदशदण्डफलम्

त्रयोदशदण्डे नैर्ऋत्यकोणे 'का का' रवम्।
यदा रटति काकस्तदा महादुःखवार्तां कथयति ॥ १३ ॥

तेरहवीं घड़ी का फल

दिन की १३ वीं घड़ी में नैर्ऋत्यकोण में काक 'का का' शब्द करे तो समझना कि बड़े भारी दुःख की बात कहता है ॥ १३ ॥

चतुर्दशदण्डफलम्

चतुर्दशदण्डे उत्तरदिशायां 'कोवा कोवा' ध्वनिम्।
यदा रटति काकस्तदा शत्रुभयं कथयति ॥ १४ ॥

चौदहवीं घड़ी का फल

१४ घड़ी दिन को काक उत्तर दिशा में 'कोवा कोवा' शब्द बोले तो समझो कि शत्रु से भय होगा ॥ १४ ॥

पञ्चदशदण्डफलम्

पञ्चदशदण्डे ऐशान्यां 'जा जा' शब्दम् ।
यदा रटति काकस्तदा महादुःखलाभं कथयति ॥ १५ ॥

पन्द्रहवीं घड़ी का फल

१५ घड़ी दिन में काक यदि ईशान कोण में 'जा जा' शब्द करे तो समझना कि बड़ा दुःख होगा ॥ १५ ॥

षोडशदण्डफलम्

षोडशदण्डे पूर्वदिशायां 'कोवा कोवा' ध्वनिम् ।
यदा रटति काकस्तदा मित्रलाभं कथयति ॥ १६ ॥

सोलहवीं घड़ी का फल

१६ घड़ी दिन को यदि काक पूर्व दिशा में 'कोवा, कोवा' शब्द करे तो समझना कि मित्र से भेंट होगी ॥ १६ ॥

सप्तदशदण्डफलम्

अहिसप्तदशदण्डे दक्षिणदिशायां 'आय आय' शब्दम् ।
यदा रटति काकस्तदा महद्दुःखं कथयति ॥ १७ ॥

सत्रहवीं घड़ी का फल

१७ घड़ी दिन को यदि काक वायुकोण में 'आय आय' शब्द करे तो समझना कि भारी दुःख होगा ॥ १७ ॥

अष्टादशदण्डफलम्

वायुकोणे अष्टादशदण्डे 'खावा खावा' ध्वनिम् ।
यदा रटति काकस्तदा महाकार्यलाभं कथयति ॥ १८ ॥

अठारहवीं घड़ी का फल

१८ घड़ी दिन को यदि काक वायुकोण में 'खावा खावा' शब्द करे तो समझना कि कार्य का लाभ होगा ॥ १८ ॥

ऊनविंशतिदण्डफलम्

पूर्वदिशायां ऊनविंशतिदण्डे 'महा महा' ध्वनिम् ।
यदा रटति काकस्तदा विदेशगमनं कथयति ॥ १९ ॥

उन्नीसवीं घड़ी का फल

१९ घड़ी दिन को यदि काक पूर्व दिशा में 'महा महा' रटे तो समझना कि विदेश-यात्रा करनी पड़ेगी ॥ १९ ॥

विंशतिदण्डफलम्

विंशतिदण्डे उत्तराभिमुखः 'अय अय' ध्वनिम् ।
यदा रटति काकस्तदा अर्थलाभवार्तां कथयति ॥ २० ॥

बीसवीं घड़ी का फल

सवीं घड़ी में यदि काक उत्तर दिशा में होकर 'अय अय' शब्द करे तो ... कि धर्म कार्य होने वाला है ॥ २० ॥

एकविंशतिदण्डफलम्

एकविंशतिदण्डे ब्रह्मस्थाने 'सा सा' ध्वनिम् ।
यदा ऊर्ध्वगो रटति काकस्तदा भूमिलाभं कथयति ॥ २१ ॥

इक्कीसवीं घड़ी का फल

दिन की २१ वीं घड़ी में यदि काक ऊपर होकर 'सा सा, ध्वनि करे तो समझना कि पृथ्वी का लाभ उस घर के मनुष्य को होगा ॥ २१ ॥

द्वाविंशतिदण्डफलम्

द्वाविंशतिदण्डे पूर्वदिशायां 'आका आका' शब्दम् ।
यदा र-ति काकस्तदा अपूर्ववस्तुलाभं कथयति ॥ २२ ॥

बाईसवीं घड़ी का फल

दिन में २२ घड़ी के बाद काक पूर्व दिशा में 'आका आका' शब्द करे तो समझना कि किसी अपूर्व (अजान) चीज का लाभ होगा ॥ २२ ॥

त्रयोविंशतिदण्डफलम्

त्रयोविंशतिदण्डे अग्निकोणे 'अद्वयं अद्वयं' शब्दम् ।
यदा रटति काकस्तदा सर्वलाभं कथयति ॥ २३ ॥

तेईसवीं घड़ी का फल

तेईस घड़ी दिन का यदि काक अग्निकोण में 'अद्वयं अद्वयं' शब्द करे तो शीघ्र घर के स्वामी को अधिक सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी ॥ २३ ॥

चतुर्विंशतिदण्डफलम्

चतुर्विंशतिदण्डे दक्षिणदिशायां 'ओवा ओवा' शब्दम् ।
यदा रटति काकस्तदा अकालचक्रं कथयति ॥ २४ ॥

चौबीसवीं घड़ी का फल

दक्षिण दिशा में दिन की २४ वीं घड़ी यदि काक 'ओवा ओवा' शब्द करे तो अकाल पड़नेवाला है यह समझना ॥ २४ ॥

पञ्चविंशतिदण्डफलम्

पञ्चविंशतिदण्डे नैर्ऋत्यकोणे 'खाये खाये' शब्दम् ।
यदा रटति काकस्तदा सर्पभयं कथयति ॥ २५ ॥

पचीसवीं घड़ी का फल

नैर्ऋत्य कोण पर पश्चिम में दिन की २५ वीं घड़ी में यदि काक 'खाये खाये' शब्द करे तो समझना कि इस घरवालों में किसी को अवश्य सर्प का भय हो ॥ २५ ॥

षड्विंशतिदण्डफलम्

षड्विंशतिदण्डे पश्चिमदिशायां 'आहा आहा' रवम् ।
यदा रटति काकस्तदा सर्वत्र लाभं कथयति ॥ २६ ॥

छब्बीसवीं घड़ी का फल

पश्चिम दिशा में दिन की २६ वीं घड़ी में काक 'आहा आहा' शब्द करे तो समझना कि गृह के स्वामी को हर जगह लाभ होगा ॥ २६ ॥

सप्तविंशतिदण्डफलम्

सप्तविंशतिदण्डे उत्तरपार्श्वे 'आका आका' ध्वनिम् ।
यदा रटति काकस्तदा महत्सुखलाभवार्ता कथयति ॥ २७ ॥

सत्ताईसवीं घड़ी का फल

उत्तर तरफ दिन की २७ वीं घड़ी में यदि काक 'आका आका' शब्द करे तो समझना कि गृहपति को बड़ा भारी सुख प्राप्त होनेवाला है ॥ २७ ॥

अष्टाविंशतिदण्डफलम्

अष्टाविंशतिदण्डे ऐशान्यां 'सा सा' ध्वनिं यदा।
रटति काकस्तदा मनस्कामनासिद्धिकथां कथयति ॥ २८ ॥

अट्ठाईसवीं घड़ी का फल

ईशान कोण पर दिन की २८ वीं घड़ी में यदि काक 'सा सा' ध्वनि करे तो समझना कि गृहपति का मनोरथ पूर्ण होगा ॥ २८ ॥

एकोनत्रिंशदण्डफलम्

ऊनत्रिंशदण्डे ब्रह्मस्थाने 'आखां आखां' रवम्।
यदा रटति काकस्तदा सुखवार्तां कथयति ॥ २९ ॥

उन्तीसवीं घड़ी का फल

दिन की २९ वीं घड़ी में यदि काक मस्तक के ऊपर होकर 'आखां आखां' शब्द करे तो समझना कि उस मनुष्य का वह दिन बड़े आनन्द से बीतेगा ॥ २९ ॥

त्रिंशद्दण्डफलम्

धरोपरि त्रिंशद्दण्डे 'आवा आवा' रवं पुनः।
यदा रटति काकस्तदा दुःखवार्तां कथयति ॥ ३० ॥

तीसवीं घड़ी का फल

दिन की ३० वीं घड़ी में यदि काक पृथ्वी पर होकर 'आवा आवा' शब्द करे तो समझना कि उस मनुष्य को बड़े दुःख की बात सुनने में आयेगी ॥ ३० ॥

अधिकोक्तिः

काक जो बोले अपने मने। छाया नापिके कीजे दुगुने ॥
सप्त भाग से बाकी जोई। बोले काक प्रमाण है सोई ॥
एक रहे तो भोजन कारी। दूजी लम्बी जाव सचारी ॥
तीजे मृत्यु यात्रा पावे। चौथा कलहा आग जलावे ॥
पाँच से मङ्गल यात्रा कहै। शून्य अरु छ निज मन की लहै ॥

दिन में जिस समय कौवा बोले उसी समय सात अंगुल खर का टुकड़ा लेकर उसकी छाया को नापे, उस नाप को दूना करे, उससे जो अंक लाभ हो उस अंक में सात का भाग देने पर जो शेष (बाकी) रहे उसका शुभाशुभ फल निम्नलिखित है—१ शेष हो तो भोजन मिले, २ हो तो उस ग्राम में कोई प्राणी उत्पन्न हो, ३ रहे तो किसी की मृत्यु होगी, ४ बाकी बचे तो अधिक उपद्रव होगा अथवा आग लगेगी, ५ रहे तो किसी स्थान से अच्छा सन्देश आवेगा, ६ अथवा शून्य बचे तो समझना काक अपनी भाषा बोलता है।

इति काकचरित्रं समाप्तम्।

अथ दिवादण्डप्रमाणम्

दिनं खरामैरधिकं यदल्पं रसेन पंक्त्यां निहतं शराप्तम्।
हीनं धनं देशपलप्रभायां छाया च सा स्याद्दिन मध्यभागे॥
छाया निजेष्टा दिनमध्यभागाच्छायोनितादिक् सहिता तथाप्ता।
दिने शरघ्ने गत-गम्य नाडी श्रीमान वराहो वदति स्वयुक्त्या॥

दिन के दण्ड का प्रमाण

दिनमान ३० घड़ी से अधिक या न्यून हो तो उसे ३० से घटाकर जो अन्तरांक हों उसे ६ से गुणा कर पाँच का भाग देने पर जो लब्धि हो उसे देशीय पलभा में धनर्ण (दिनमान ३० से अधिक होने पर ऋण अन्यथा धन करे) वही मध्याह्नकालिक छाया होगी। इसको इष्ट छाया में घटाकर १० जोड़ दें तथा पंचगुणित दिनमान में इससे भाग दें, जो लब्धांक होगा वही इष्ट काल होगा। यदि मध्याह्न के बाद का जानना हो तो दिनमान में घटाना होगा।

अथ रात्रिदण्डप्रमाणम्

अतोशश्रापक्ष नवत्रयोदश कपोदिनष्टकपमूश्चतुर्दश।
ततोतिसार्द्धाशिवरात्रिपक्षकंटीसातुराष्टयाविधि विष्णुषोडशम्।

रात्रि के दण्ड का प्रमाण

जितनी रात्रि में प्रश्न करनेवाला प्रश्न करे, उस समय रात्रि का अंदाज यदि न मिले, तो जो मनुष्य प्रश्न करे, उससे एक फूल का नाम लेने को कहना। उस फूल में नाम यदि अक्षर आकार से गणना आदि तक के नौ अक्षर आदि हों, तो रात्रि का अनुमान ५ दण्ड वा १३ दण्ड होगा। एक और

आदि के अक्षर उकार से मकार तक यदि नौ अक्षर आदि हो तो २-६-१४ दण्ड रात्रि का अनुमान समझना और च आदि से अक्षर तक अ—क्ष तक हो तो २-११-१२ दण्ड रात्रि का अनुमान समझना चाहिये ॥ इति ॥

अथ अंगस्पन्दविचारः

अङ्गस्फूर्तिं प्रवक्ष्यामि यथैव मुनिभाषितम् ।
फलाफलं विदित्वा तु वदाम्यत्र शुभाशुभम् ॥

मनुष्य के अंग फड़कने का विचार

देह के प्रत्येक अंग फड़कने से जो शुभाशुभ फल होता है उसे स्पष्ट कहते हैं। सिर फड़के तो राजा के यहाँ सम्मान मिले। शिर का दक्षिण भाग फड़के तो सुख मिले, वाम शिर फड़के तो अशुभ, ललाट फड़के तो ऐश्वर्य लाभ, दक्षिण नेत्र फड़के तो जयलाभ अथवा मित्र से मुलाकात हो, वाम नेत्र फड़कने से धन की हानि अथवा राजभय हो, अथवा दूसरी कोई आपत्ति प्राप्त हो, दक्षिण नेत्र के नीचे फड़के तो कष्ट हो, ऊपर फड़के तो सुख हो, बायीं नाक फड़के तो मृत्यु अथवा मृत्यु के समान रोग हो, दक्षिण नासिका फड़कने से मधुर भोजन मिले, जिह्वा फड़कने से अधिक धन मिले, तालु फड़कने से कलह हो, परन्तु धन का लाभ भी अधिक हो, कर्ण फड़कने से कुटुम्ब लाभ होगा तथा अति सुन्दर स्त्री मिले, वाम कर्ण फड़के तो शिर में पीड़ा हो, दोनों कर्ण फड़के तो धन की प्राप्ति हो और सन्तोष भी हो। दक्षिण स्कन्ध फड़के तो सोना मिले, बाये स्कन्ध फड़के तो कुछ यात्रा करनी पड़े, दोनों स्कन्ध फड़के तो सिर काटा जाय। सीस फड़के तो वस्त्र मिले और सन्तोषजनक वृत्ति हो, दक्षिण भुजा फड़के तो बड़ा बलवान हो, वाम पद फड़के तो कलह हो, दक्षिण पद (पाँव) फड़कने से दूर (विदेश) जाना हो, वाम पद फड़कने से बड़ा सुख हो। अँगुली फड़के तो भोजन मिले। कमर फड़के तो समझना कि आम रोग होगा। ललाट फड़के तो समझना कि राजद्वार जाकर सम्मान पावेंगे। भग फड़कने से पीड़ा प्राप्त हो, छाती फड़के तो सर्वाङ्ग पीड़ा हो, पीठ फड़के तो शूल रोग हो, नाभि फड़कने से दुष्ट स्वप्न देखे. ऊरु (जाँघ) फड़के तो सर्व जय हो और कुशल हो, गुदा फड़कने से सिर कटे,

कंठ फड़के तो केश का नाश हो, नितम्ब (चूतड़) फड़के तो शरीर में फोड़ा, फिर भी सिर फड़के तो विजय को प्राप्ति हो।

इस प्रकार से मुनिवृन्दों ने शरीर फड़कने का शुभाशुभ फल कहा है। विचारपूर्वक मनुष्य फल समझ ले।

सुप्रसवप्रश्नः

अच्छी रीति से गर्भ जानने का मन्त्र।
अस्ति गोदावरीतीरे जन्माला नाम राक्षसी।
तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत् ॥ १ ॥

इस मन्त्र को पढ़कर और इसी यन्त्र को लिखकर गले में बाँधने से शीघ्र ही गर्भिणी स्त्री सकुशल प्रसव (बच्चा पैदा करना) करती है।

और इसी मन्त्र को लाल चन्दन और अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर जल में घोकर गर्भिणी को पिला दे तो स्त्री की गर्भजन्य पीड़ा दूर होकर सुख प्रसव हो ॥ १ ॥

गर्भप्रश्न

रवि	चन्द्र	मंगल
बुध	गुरु	शुक्र
❀	शनि	❀

रवि गुरु मङ्गल सुत उत्पन्ना। सोम शुक्र बुध जाने कन्या ॥
शनि का गर्भ गलित करि डारी। कहैं व्यास यह प्रश्न विचारी ॥

गर्भ का प्रश्न

किसी के गर्भ में पुत्र है या कन्या है, यदि इसकी परीक्षा करनी हो तो ऊपर के चक्र में हाथ रखकर अक्षर देख के विचार ले। इस प्रकार से कि रवि मंगल

गुरु इन तीनों में से किस कोठी में हस्त पड़े तो अवश्य पुत्र होगा। चन्द्र, बुध, शुक्र इनमें कर पड़े तो समझना कि कन्या होगी। शनि के कोठे में कर पड़े तो गर्भ गिर जायगा। यह व्यासजी का कथन है।

रामचरित्रप्रश्न

राम	सीता	लक्ष्मण
भरत	शत्रुघ्न	हनुमान

रामराज सुखसेज विलासा। सीता सोच कर वन बासा॥
लक्ष्मण लक्ष जात घर आवे। हनुमत आगे खबर जनावे॥
भरतके खत होय अनन्दा। देखि रिपुहन तरकस कन्धा॥

४	१०	६
८	५	६
११	२	१२

चारि औ दश पुनि आगम आवे। आठ पाँच फल माँगे पावे॥
तीन औ ग्यारह से ले राजू। नव छः ते रह करै अका॥

अष्टावक्रगीता (राजा जनक और अष्टावक्र संवाद)

मूल संस्कृत श्लोक, हिन्दी अनुवाद और व्याख्या सहित

व्याख्याकार श्री नंदलाल दशोरा मूल्य ४५.००

राजा जनक ने देश के बड़े-बड़े सभी विद्वानों को बुलाकर एक सभा का आयोजन किया। जिसमें तत्व ज्ञान पर शास्त्रार्थ रखागया था। शास्त्रार्थ मे भाग लेने देश के बहुत से विद्वान एकत्र हुये जिसमे अष्टावक्र के पिता भी थे। शास्त्रार्थ में तत्व ज्ञान पर चर्चा हुई और सांयकाल को अष्टावक्र को सूचना मिली कि उनके पिता अन्य सभी से जीत गये हैं किंतु एक पंडित से हार रहे हैं, यह सुनकर अष्टावक्र भी सभा में पहुंच गये। सभा पंडितों की ही थी उनमें आत्म ज्ञानी तो कोई था नहीं। अष्टावक्र जब अपने टेढ़े-मेढ़े शरीर से चलते हुये सभा में पहुंचे उनकी आकृति देखकर सभी सभासद् हंस पड़े। थोड़ी देर रुककर अष्टावक्र भी उन सभासदों को देखकर जोर से हँसे। उनको हँसता देखकर राजा जनक ने पूछा कि ये विद्वान क्यों हँसे ये तो मैं समझ गया लेकिन तुम क्यों हँसे ये मुझे समझ नहीं आया। इस अष्टावक्र ने कहा कि "इन चर्मकारों की सभा में आज सत्य का निर्णय हो रहा है।" बारह वर्ष का यह बालक कितना अनूठा रहा होगा कितना प्रतिभाशाली होगा जिसने देश के प्रसिद्ध विद्वानों को चर्मकार की संज्ञा दे डाली। "हे राजन् जैसे मंदिर टेढ़ा होने से आकाश टेढ़ा नहीं होता और मंदिर के गोल अथवा लम्बा होने से आकाश गोल अथवा लम्बा नहीं होता क्योंकि आकाश का मंदिर के साथ कोई सम्बंध नहीं। आकाश निरवयव है और मंदिर सावयव है वैसा ही आत्मा का भी शरीर से कोई सम्बंध नहीं क्योंकि आत्मा निरवयव है और शरीर सावयव है। शरीर के वक्र आदिक धर्म आत्मा के कदापि नहीं हो सकते। हे राजन्! ज्ञानवान को आत्म दृष्टि रहती है वह आत्मा को ही देखता है और अज्ञानी की चर्म दृष्टि रहती है।" अष्टावक्र के इन वचनों को सुनकर राजा जनक उनके चरणों में गिर पड़े और उन्हें ज्ञान का उपदेश देने हेतु अपने महलों मे आमंत्रित किया। दूसरे दिन जब अष्टावक्र वहां पहुंचे तो उन्हें सिंहासन पर बैठाया, स्वयं उनके चरणों में बैठे व शिष्यभाव से अपनी जिज्ञासाओं का इस बारह वर्ष के बालक अष्टावक्र से समाधान कराया। यही शंका समाधान जनक अष्टावक्र सम्वाद रूप में अष्टावक्र गीता है।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार